MANONMANIAM SUNDARANAR UNIVERSITY

DIRECTORATE OF DISTANCE AND CONTINUING EDUCATION

TIRUNEVELI- 627 012

STUDY MATERIAL FOR B.A., B.SC., B.B.M., B.COM.& B.B.A.

PART-I HINDI

PAPER -I

PROSE, SHORT STORIES, GRAMMAR,COMPREHENSION, LETTER WRITING & PRECIS WRITING

Prepared by

Dr.M.SHAHUL HAMEED.
LECTURER
DEPT OF HINDI
MANONMANIAM SUNDARANAR UNIVERSITY
TIRUNELVELI – 627 012.

PART-I HINDI

PAPER I

PROSE, SHORT STORIES, GRAMMAR, COMPREHENSION, LETTER WRITING & PRÉCIS WRITING

Unit -1 Prose :.
Mithratha, Hathiyom ke Camp Mein, Paramanu yug mein Samajik Chetana , Joy Aur Alice Ka Pyar, Atma Nirbharatha, Bahu ki Bida.(Gadya Sankalan Part 2- Published by D.B.H.P. Sabha, Chennai -17)

Unit -2 Short Stories:.
Lal Angooron Ka Maskaan, Amiron Ka Bhagawan,Heeng Wala , Aadmi Khushi Khoj Lega, Sneh Ka Dard.(Galpasanchayan Part 1 Published by D.B.H.P.Sabha, Chennai-17)

Unit- 3 Grammar and Comprehension:
Noun-Gender, Number Case Endings, Pronoun and Adjective.
(Vyakaran Pradeep By Ram Dev –Publisher –Hindi Bhavan, Allahabad-2.)

Unit -4 Letter Writing :
(Abhinav Pathra Lekhan, D.B.H.P. Sabha,Chennai -17. Madhyamic Bazaar Samachar Pathra Lekhan tathaa Saar Lekhan by K.B.Seksena, B.N.Hookoo & S.R.Alen –publisher: S.Chand and Company ltd., Ram Nagar New Delhi-55.)

Unit - 5 Précis Writing & Question Paper Pattern
(Abhinav Pathra Lekhan, D.B.H.P. Sabha,Chennai -17. Madhyamic Bazaar Samachar Pathra Lekhan tathaa Saar Lekhan by K.B.Seksena, B.N.Hookoo & S.R.Alen –publisher: S.Chand and Company ltd., Ram Nagar New Delhi-55.)

Unit -1 Prose

1. मित्रता

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

लेखक परिचय:

हिन्दी समालोचना, निबंध तथा हिन्दी साहित्य के इतिहास-लेखन की परंपराओं को सुदृढ़ करने की दृष्टि से आचार्य रामचंद्र शुक्ल का नाम सबसे अग्रणी है। शुक्लजी का जन्म सन् 1888 में तथा देहावसान सन् 1940 में हुआ। शुक्लजी ने संस्कृत तथा अंग्रेज़ी साहित्य, मनोविज्ञान, इतिहास आदि का गहन अध्ययन किया। आपने हिन्दी साहित्य का इतिहास लिखकर साहित्य के इतिहास-लेखन की वैज्ञानिक नींव डाली। श्रद्धा और भक्ति, उत्साह, करुणा जैसे मनोविकारों पर गंभीर निबंध लिखकर हिन्दी निबंध को नई दिशा प्रदान की। जायसी, तुलसी, सूर आदि के काव्यों की गहरी मीमांसा कर तथा रस जैसे शास्त्रीय विषयों पर सैद्धांतिक ओर व्यावहारिक समीक्षा लिखकर हिन्दी आलोचना को गंभीर स्वरूप प्रदान किया। उनके मनोविकार संबंधी निबंध चिंतामणि भाग 1-2 में संकलित हैं। आपने वर्षों तक नागरी प्रचारिणी पत्रिका का संपादन किया। गद्यकार के साथ-साथ वे कवि व कहानीकार भी थे।

सारांश:

मित्रता शुक्ल जी का मनोविकार संबंधी एक सरल, विचार-प्रधान प्रेरणा देनेवाला निबंध है। इस निबंध में उन्होंने सरल भाषा में मित्रता की आवश्यकता, अच्छे मित्र के गुण, सत्संगति का लाभ आदि पर व्यावहारिक विचार प्रस्तुत किए हैं।

जब कोई युवा पुरुष अपने घर से बाहर निकलकर बाहरी संसार में अपनी स्थिति जमाता है, तब पहली कठिनता उसे मित्र चुनने में पड़ती है। यदि उसकी स्थिति बिल्कुल एकांत और निराली नहीं रहती तो उसकी जान-पहचान के लोग धड़ाधड़ बढ़ते जाते हैं ओर थोड़े ही दिनों में कुछ लोगों से उसका हेल-मेल हो जाता है। यही हेल-मेल बढ़ते-बढ़ते मित्रता के रूप में परिणत हो जाता है। मित्रों के चुनाव की उपयुक्तता पर उसके जीवन की सफलता निर्भर हो जाती है; क्योंकि संगत का गुप्त प्रभाव हमारे आचरण पर बड़ा भारी पड़ता है।

मित्रता ऐसे लोगों का साथ करना हमारे लिए बुरा है जो हमसे अधिक दृढ़-संकल्प के हैं; क्योंकि हमें उनकी हर एक बात बिना विरोध के मान लेनी पड़ती है। पर ऐसे लोगों का साथ करना और भी बुरा है जो

हमारी ही बात को }पर रखते हैं क्योंकि ऐसी दशा में न तो हमारे }पर कोई दाब रहती है और न हमारे लिए कोई सहारा रहता है। दोनों अवस्थाओं में जिस बात का भय रहता है, उसका पता युवा पुरुषों को प्रायः बहुत कम रहता है। यदि विवेक से काम लिया जाय तो यह भय नहीं रहता; पर युवा पुरुष प्रायः विवेक से कम काम लेते है।

हँसमुख चेहरा, बातचीत का ढ़ंग, थोड़ी चतुराई व साहस---- ये ही दो-चार बातें किसी में देखकर लोग चटपट उसे अपना बना लेते है। हम लोग यह नहीं सोचते कि मैत्री का उद्देश्य क्या है तथा जीवन के व्यवहार में उसका कुछ मूल्य भी है। बात हमें नहीं सूझती कि यह एक ऐसा साधन है जिससे आत्मशिक्षा का कार्य बहुत सुगम हो जाता है।

सच्ची मित्रता में उत्तम-से-उत्तम वैद्य की-सी निपुणता और परख होती है, अच्छी-से-अच्छी माता का - सा धैर्य और कोमलता होती है। ऐसी ही मित्रता करने का प्रयत्न प्रत्येक युवा पुरुष को करना चाहिए। छात्रावस्था में तो मित्रता की धुन सवार रहती है। मित्रता हृदय से उमड़ पड़ती है। पीछे के जो स्नेह-बंधन होते हैं, उनमें न तो उतनी उमंग रहती है ओर न उतनी खिन्नता। बालमैत्री में जो मग्न करनेवाला आनंद होता है जो हृदय को बंधनेवाली ईर्ष्या और खिन्नता होती है, वह और कहाँ?

सहपाठी की मित्रता इस उक्ति में हृदय के कितने भारी उथल-पुथल का भाव भरा हुआ है। किंतु जिस प्रकार युवा पुरुष की मित्रता स्कूल के बालक की मित्रता से दृढ़, शांत और गंभीर होती है, उसी प्रकार हमारी युवावस्था के मित्र बाल्यावस्था के मित्रों से कई बातों में भिन्न होते हैं। मित्र केवल उसे नहीं कहते जिसके गुणों की तो हम प्रशंसा करें पर जिससे हम स्नेह न कर सकें, जिससे अपने छोटे-मोटे काम तो हम निकालते जाएँ, पर भीतर ही भीतर घृणा करते रहें। मित्र सच्चे पथ-प्रदर्शक के समान होना चाहिए जिस पर हम पूरा विश्वास कर सके; भाई के समान होना चाहिए जिसे हम अपना प्रीतिपात्र बना सकें। हमारे और हमारे मित्र के बीच सच्ची सहानुभूति होनी चाहिए-- ऐसी सहानुभूति जिसमें दोनों मित्र एक-दूसरे की बराबर खोज-खबर लिया करें, ऐसी सहानुभूति जिससे एक के हानि-लाभ को दूसरा अपना हानि-लाभ समझे। मित्रता के लिए यह आवश्यक नहीं है कि दो मित्र एक ही प्रकार का कार्य करते हों व एक ही रुचि के हों। इसी प्रकार प्रकृति और आचरण की समानता भी आवश्यक व वांछनीय नहीं है। दो भिन्न प्रकृति के मनुष्यों में बराबर प्रीति और मित्रता रही है।

हमें ऐसे ही मित्रों की खोज में रहना चाहिए जिनमें हमसे अधिक आत्मबल हो। हमें उनका पल्ला उसी तरह पकड़ना चाहिए, जिस तरह सुग्रीव ने राम का पल्ला पकड़ा था। मित्र हों तो प्रतिष्ठित ओर शुद्ध हृदय के

हों, मृदुल ओर पुरुषार्थी हों, शिष्ट और सत्यनिष्ठ हों, जिसमें हम अपने को उनके भरोसे पर छोड़ सकें ओर यह विश्वास कर सकें कि उनसे किसी प्रकार का धोखा न होगा। मित्रता एक नई शक्ति की योजना है।

संसार में अनेक महान् पुरुष मित्रों की बदौलत बड़े-बड़े कार्य करने में समर्थ हुए हैं। मित्रों ने उनके हृदय के उच्च भावों को सहारा दिया है। मित्रों के ही दृष्टांतों को देखकर उन्होंने अपने हृदय को दृढ़ किया है। अहा! मित्रों ने कितने मनुष्यों के जीवन को साधु ओर श्रेष्ठ बनाया है। उन्हें मूर्खता और कुमार्ग के गडहों से निकालकर सात्विकता के पवित्र शिखर पर पहुँचाया है। मित्र उन्हें सुंदर मंत्रणा और सहारा देने के लिए सदा उद्यत रहते हैं उनके सुख और सौभाग्य की चिंता वे निरंतर करते रहते हैं। ऐसे भी मित्र होते हैं जो विवेक को जागरित करना ओर कर्तव्य-बुद्धि को उत्तेजित करना जानते हैं। ऐसे भी मित्र होते हैं जो टूटे जी को जोड़ना ओर लड़खड़ाते पाँवों को ठहराना जानते हैं। बहुत सारे मित्र हैं जो ऐसे दृढ़ आशय और उद्देश्य की स्थापना करते हैं जिससे कर्मक्षेत्र में आप भी श्रेष्ठ बनाते हैं। मित्रता जीवन और मरण के मार्ग में सहारे के लिए है। यह सैर-सपाटे और अच्छे दिनों के लिए भी है तथा संकट और विपत्ति के बुरे दिनों के लिए भी है। यह हँसी-दिल्लगी के गुलछरों में भी साथ देती है ओर धर्म के मार्ग में भी। मित्रों को एक-दूसरे के जीवन के कर्तव्यों को उन्नत करके उन्हें साहस, बुद्धि और एकता द्वारा चमकाना चाहिए।

आजकल जान-पहचान बढ़ाना कोई बड़ी बात नहीं है। कोई भी युवा पुरुष ऐसे अनेक युवा पुरुषों को पा सकता है जो उसके साथ थिएटर देखने जाएँगे, नाच-रंग में जाएँगे, सैर-सपाटे में जाएँगे, भोजन का निमंत्रण स्वीकार करेंगे। यदि ऐसे जान-पहचान के लोगों से कुछ हानि न होगी तो लाभ भी न होगा। पर यदि हानि होगी तो बड़ी भारी होगी। सोचो तो, तुम्हारा जीवन कितना नष्ट होगा, यदि ये जान-पहचान के लोग उन मनचले युवकों में से निकलें जिनकी संख्या दुर्भाग्यवश आजकल बहुत बढ़ रही है, यदि उन शोहदों में से निकलें जो अमीरों की बुराइयों और मूर्खताओं की नकल किया करते हैं, दिन-रात बनाव-सिंगार में रहा करते हैं, कुलटा स्त्रियों के फोटो मोल लिया करते हैं महफिलों में 'ओ हो हो' 'वाह' 'वाह' किया करते हैं, गलियों में ठठ्ठा मारते हैं और सिगरेट का धुआँ उड़ाते चलते हैं। ऐसे नवयुवकों से बढ़कर शून्य निःसार और शोचनीय जीवन और किसका है? ये अच्छी बातों के सच्चे आनंद से कोसों दूर है। उनके लिए न तो संसार में सुंदर और मनोहर उक्तिवाले कवि हुए हैं और ना सुंदर आचरणवाले महात्मा हुए हैं। उनके लिए न तो बड़े-बड़े अद्भुत कर्म कर गए हैं न बड़े-बड़े ग्रंथकार ऐसे विचार छोड़ गए हैं जिनसे मनुष्य-जाति के हृदय में सात्विकता की उमंगें उठती हैं। उनके लिए फूल-पत्तियों में कोई सौंदर्य नहीं, झरनों के कलकल में मधुर संगीत नहीं, अनंत सागर-तरंगों में गंभीर रहस्यों का आभास नहीं, उनके भाग्य में सच्चे प्रयत्न और पुरुषार्थ का

आनंद नहीं, उनके भाग्य में सच्ची प्रीति का सुख ओर कोमल हृदय की शांति नहीं। जिनकी आत्मा अपने इंद्रिय विषयों में ही लिप्त है, जिनका हृदय नीच आशयों और कुत्सित विचारों से कलुषित है, ऐसे नाशोनमुख प्राणियों को दिन-दिन अंधकार में पतित होते देख कोन ऐसा होगा जो तरस न खाएगा? जिसने स्वसंस्कार का विचार अपने मन में ठान लिया हो, उसे ऐसे प्राणियों का साथ न करना चाहिए।

हृदय को उज्ज्वल ओर निष्कलंक रखने का सबसे अच्छा उपाय यही है कि बुरी संगत की छूत से बचो। यह पुरानी कहावत है कि--

काजर की कोठरी में कैसे हूँ सयानो जाय,
एक लीक काजर की लागिहै पै लागिहै।

जो कुछ उपर कहा गया है, उससे यह न समझना चाहिए कि मैं युवा पुरुषों को समाज में प्रवेश करने से रोक्ता हूँ। नहीं, कदापि नहीं। अच्छा समाज यदि मिले तो उसका बहुत अच्छा प्रभाव पड़ता है और उससे आत्मसंस्कार के कार्य में बड़ी सहायता मिलती है। प्रायः देखने में आता है कि गाँवों से जो लोग नगरों में जीविका आदि के लिए आते हैं उनका जी बहुत दिनों तक, संगी-साथी न रहने से , बहुत घबराता है ओर कभी-कभी उन्हें ऐसे लोगों का साथ कर लेना पड़ता है, जो उनकी रुचि के अनुकूल नहीं होते। ऐसे लोगों के लिए अच्छा तो यह होता कि वे किसी साहित्य-समाज में प्रवेश करें। पर वहाँ भी उन्हें उन सब बातों की जानकारी नहीं प्राप्त हो सकती जो स्वशिक्षा के लिए आवश्यक है। समाज में प्रवेश करने से हमें अपना यथार्थ मूल्य विदित होता है।

समाज एक परेड है जहाँ हम चढ़ाई करना सीखते हैं, अपने साथियों के साथ-साथ मिलकर बढ़ना ओर आज्ञापालन करना सीखते हैं, इनसे भी बढ़कर और-और बातें हम सीखते हैं। हम दूसरों का ध्यान रखना, उनके लिए कुछ स्वार्थत्याग करना सीखते हैं, सद्‌गुणों का आदर करना और सुंदर चाल-ढाल की प्रशंसा करना सीखते हैं।

सुडौल और सुंदर वस्तु को देखकर हम सब लोग प्रसन्न होते हैं। सुंदर चाल-ढाल को देखकर हम सब लोग आनंदित होते हैं। मीठे वचनों को सुनकर हम सब लोग संतुष्ट होते हैं। ये सब बातें मनोनीत होती है, शिक्षा द्वारा प्रतिष्ठित आदर्श के अनुकूल होती है। किसी भले आदमी को यह कहते सुनकर कि फटी-पुरानी और मैली पुस्तक हाथ में लेकर पढ़ते नहीं बनता, हमें हँसना न चाहिए। सोचो तो कि तुम्हारी मण्डली में कोई उजड्ड-गँवार आकर फूहड़ बातें बकने लगे तो तुम्हें कितना बुरा लगेगा।

2. हाथियों के कैम्प में

श्री सुरेश वैद्य

सारांश:

मद्रास राज्य में एक छोटा-सा स्थान है, कारगुडी। यह नीलगिरि पहाड़ियों एवं थलवान मुडुमुलाई पर्वतमाला के मध्य में स्थित है। इसके चारों तरफ घना जंगल है। वहीं पहाड़ियों के नीचे एक खुले मैदान में एक कैम्प बना है--हाथियों का कैम्प।

कारगुडी हाथियों के कैम्प के लिए आदर्श स्थान है क्योंकि चारों तरफ का विशाल जंगल सदा ही हरा-भरा रहता है और चारे की कमी नहीं हो पाती। दूसरे, तेज से तेज गरमी में भी नदी का जल क्षीण नहीं होता। मुड़मुलाई पर्वत-माला की ढलवान भूमि पर यद्यपि मोयार नदी एक चंचल झरने की तरह ही उतरती है, मगर कारगुडी पहुँचकर उसकी चंचलता नष्ट हो जाती है ओर यहाँ वह खूब गंभीर एवं शांत होकर बहती है। उसका पाट भी यहाँ खूब चौड़ा है। गहराई भी इतनी है कि हाथी उसमें स्नान करने के साथ-साथ तैरने का आनंद भी ले सकते हैं। नदी में कितने ही प्रकार के ऐसे क्षुप पौधे भी हैं जो हाथी को अत्यंत प्रिय हैं। मधुर रस से भरे सरकड़ों की झाड़ियों से नदी के किनारे इस तरह भरे हैं कि हाथी उन्हें सूँड़ से उखाड़कर मज़े से चबाया करते हैं।

कारगुडी के कैम्प में जंगल से पकड़कर लाए गए जंगली हाथियों को प्रशिक्षित किया जाता है और पालतु हो गए हाथियों को रखने के लिए यहाँ एक गजशाला बनी है।

दक्षिणी तथा पूर्वी भारत में हाथियों के पकड़ने का एक स्थायी पेशा है। दुर्गम मार्गों पर सवारी करने और घने जंगलों के बीच से भारी लकड़ियाँ खींच लाने के लिए हाथी बहुत उपयोगी होता है, इसलिए देश की अनेक मंडियों में उसकी माँग सदा ही बना रहती है। यों, पालतू हाथियों से भी बच्चे प्राप्त तो होते हैं मगर उनसे ही सारी माँग पूरी नहीं हो सकती। इसलिए अधिक संख्या में हाथियों का प्रबंध जंगल से ही करना पड़ता है।

दक्षिण भारत में हाथी पकड़ने की प्रचलित प्रणाली को 'गढ़ा-प्रणाली' कहा जाता है। सबसे पहले खोजे लोग हाथियों के पद-चिन्हों से यह पता लगाते हैं कि इस समय उनका यूथ वन के किस भाग में घूम रहा है। इसके बाद उनके आने-जाने के मार्ग में दस फुट लंबे, दस फुट चौडे और बारह फुट गहरे गढ़े खोद दिए जाते हैं। इन गढ़ों पर पतले बाँसों के जाल बिछाकर उनपर मिट्टी फैला दी जाती है और उसपर घास बिछा दी जाती है। इन गढ़ों में गिरने से हाथियों को खेट न पहुँचे इसके लिए उनमें कोमल पत्तियों की मोटी तहें

बिछाकर उन्हें गुदगुदा बना दिया जाता है। इस प्रकार फंदा तैयार कर कुछ लोग पास के पेड़ों में छिपकर बैठ जाते हैं।

हाथियों में साथीपन की भावना बहुत प्रबल होती है। इसलिए इन गढ़ों में यदि उनका कोई साथी गिर पड़ता है तो यूथ के बाकी हाथी उसकी सहायता में लग जाते हैं। पहले तो गढ़े में सूँड बढ़ाकर उसे बाहर निकालने का यत्न किया जाता है।मगर इससे जब काम नहीं बनता तो बड़े-बड़े हाथी अपने लंबे दाँतों से गढ़े के किनारे को इस प्रकार खोद देते हैं कि कैदी हाथी उस ढलान से बाहर आ सके। उनके ये सभी प्रयत्न इतनी लगन के साथ किए जाते हैं कि यदि उन्हें पूरा समय मिले तो वे अपने साथी को निकाल ले जाने में पूरी तरह सफल हो सकते हैं। मगर फंदापार्टी वेसा नहीं होने देती। जैसे ही किसी गढ़े में कोई हाथी गिरता है, तुरंत कैम्प में इसकी सूचना पहुँचा देते हैं। कैम्पवाले भी देर नहीं लगाते। सूचना पाते ही वनाधिकारी और वनरक्षक उस स्थल पर महावत और घसियारों के साथ आ पहुँचते हैं। वे अपने साथ कुमुकी हाथी भी लाते हैं जो पहले से पाले हुए होते हैं। आते हुए ये लोग बंदूकें और पटाखे चलाते और खाली टीन बजाते रहते हैं ताकि गढ़े पर खड़ा हुआ हाथियों का झुंढ भाग जाए। गढ़े पर पहुँचकर कुमुकी हाथियों को बंदी हाथी के पहरे पर तैनात कर दिया जाता है और इस प्रकार उसके निकल भागने का मार्ग रोक दिया जाता है।

हाथी को अठारह घंटे तक गढ़े में ही पड़े रहने दिया जाता है। इतने समय में वह काफ़ी थक जाता है और उसमें अधिक प्रतिरोध की शक्ति शेष नहीं रहती। बाहर निकालने से पहले उसके एक अगले ओर एक पिछले पैर में रस्से बाँध दिए जाते हैं। एक-एक रस्सा गरदन ओर पीठ में भी बाँध दिया जाता है। इतना सब कर लेने के बाद गढ़े में कुछ तख्ते उतारे जाते हैं ओर उनके सहारे हाथी को बाहर निकाल लिया जाता है।

हाथी के बाहर आ जाने पर उसे कुमुकियों के बीच रखकर सबसे पहले किसी जलाशय पर पानी पिलाने और स्नान कराने के लिए ले जाया जाता है। बाल्टियों से उसकी पीठ पर खूब पानी डाला जाता है जिससे उसकी थकावट ओर परेशानी दूर हो सके। जलाशय से निकालकर नए हाथी को सीधे जंगल-कैम्प में पहुँचा दिया जाता है जहाँ कुछ दिन बाद उसका प्रशिक्षण प्रारंभ हो जाता है। हाथियों का प्रशिक्षण काफ़ी कठिन है। शिक्षक एवं शिष्य दोनों के लिए ही यह अत्यंत कष्टसाध्य है।

घटनाओं, व्यक्तियों एवं शब्दों को स्मरण करने की हाथी में असाधारण योग्यता होती है। कुल मिलाकर उसे सत्ताईस शब्द ही स्मरण करने होते हैं जिनके अनुसार वह घूमना, बैठना, उठना, पैर या सूँड़ उठाना ओर ठोकर लगाना आदि क्रियाएँ करता है। उनके सीख जाने पर महावत निश्चिंतता से ही उसके साथ

चल सकता है ओर आवश्यकतानुसार उससे प्रत्येक काम ले सकता है। मगर इन शब्दों को सिखाना तथा तदनुसार कार्य करा सकना सुगम नहीं होता।

सबसे पहले कुछ घसियारे हाथों में लाठियाँ लेकर बंदी को चारों तरफ़ से घेरकर इस तरह खड़े हो जाते हैं मानो वे कोई खेल खेलने के लिए खड़े हुए हों। बंदी के सामने ही भावी महावत खडा हो जाता है। उसके हाथ में लाठी नहीं होती बल्कि एक गन्ना होता है। अब वे लोग खूब उँचे स्वर में एक गीत गाने लगते हैं जिसका अगुवा स्वयं महावत ही होता है। गीत इतना बेसुरा होता है कि सुनकर बंदी हाथी थोड़ी ही देर में तंग आ जाता है। मगर कोई उपाय न रहने से उसे मन मारकर रह जाना पड़ता है। वह जब इस तरह मन ही मन कुढ़ रहा होता है, उसके पीछे खड़ा एक घसियारा अचानक ही अपने चिपचिपे हाथ से उसकी पीठ पर थपकी देता है, जिससे हाथी तुरंत ही घूमकर थपकी देनेवाले पर झपटने की चेष्टा करता है। मगर अभी वह पूरी तरह घूम भी नहीं पाता कि पीछे खड़ा दूसरा घसियारा उसके कंधे पर चोट करता है और बंदी को तुरंत ही इस घसियारे की तरफ घूम जाना पड़ता है। देखते ही देखते एक चक्कर बँध जाता है। कुछ ही समय में हाथी पर बेहद मार पड़ने लगती है। फल यह होता है कि लगातार घूमा-घामी करते हुए वह अत्यंत थक जाता है ओर शांत होकर खड़ा हो जाता है। ठीक उसी समय भावी महावत अपने हाथ के गन्ने को उसके सिर पर ले जाता है और उसे लेने के लिए बंदी हाथी अपनी सूँड़ उपर उठाता है। महावत पुकार उठता है, 'सलाम' और खेल समाप्त हो जाता है। यह खेल प्रतिदिन ही चलता है ओर एक दिन ऐसा भी आता है जब महावत को गन्ना उसके सिर पर नहीं उठाना पड़ता, बल्कि 'सलाम' शब्द को सुनते ही हाथी सूँड़ उठाने लगता है।

इस प्रकार तीन महीने में हाथी बारह शब्द याद कर लेता है। जब देखते हैं कि हाथी अब विश्वसनीय हो गया है, उसे भ्रमण के लिए प्रातः-- सायं गजशाला से बाहर ले जाना भी शुरु कर दिया जाता है। इस अवसर पर कुमुकी उसके पीछे रहकर उसकी प्रत्येक चेष्टा को---- विशेषकर वह जब पार्क, सड़क या जनाकीर्ण मार्गों में से गुजरता है-- ध्यान से देखता रहता है।

कैम्प के नए ओर पुराने सभी हाथियों को प्रतिदिन दो बार स्नान कराने नदी पर ले जाया जाता है। हाथी को पानी कितना प्रिय है, यह उसे नहाते समय देखा जा सकता है। इस अत्यधिक जल-प्रेम का वैज्ञानिक कारण है कि हाथी का रक्त जल्दी ही उष्ण हो जाता है और उसे ठंडक पहुँचाने की अनिवार्य आवश्यकता होती है। वह जब तक पर्याप्त समय के लिए आलसियों की तरह पेट के बल पानी में पड़ा रहे और एक करवट लेटे रहने के बाद दूसरी करवट न लेट ले, किसी की परवाह नहीं करता। स्नान के समय ही महावत उसके सारे

शरीर की मालिश करता है, जिससे हाथी खूब तरोताजा और प्रसन्न हो जाता है ओर फिर गहरे पानी में तैरने या अपने साथियों के साथ खेलने चला जाता है।

फिर हाथी भोजनशाला की तरफ बढ़ता है और चलते हुए मार्ग की रेत और मिट्टी अपने उपर डालता जाता है ताकि शरीर सूख जाए। भोजनशाला का यह नियम है कि हाथी जिस क्रम से आते हैं उसी क्रम से खड़े होते हैं। जो बाद में विलंब से आता है उसे जहाँ भी थोड़ा-बहुत स्थान मिले खड़ा हो जाना पड़ता है। मगर ऐसा करते हुए वे आपस में लड़ते नहीं हैं। इससे पता चलता है कि हाथी काफी सभ्य पशु होता है। खाना खिलाते समय महावत नमक और मीठा मिलाए हुए गेहूँ और चावल के बड़े-बड़े गोले बनाकर ओर उन्हें अपनी हथेली पर रखकर हाथी की तरफ बढ़ाता है और हाथी उन्हें सूँड़ से उठाकर मुँह में डाल लेता है। उसे दो-तीन बार से अधिक चबाने की आवश्यकता नहीं पड़ती और गोला पेट में उतर जाता है। कुल मिलाकर एक हाथी को चालीस किलो अन्न के गोले दिए जाते हैं जो उसके लिए बहुत कम होते हैं, क्योंकि हाथी की भूख लगभग पाँच मन चारा लिए बिना नहीं मिटती।

यदि केवल स्नान और भोजन ही हाथी की दिनचर्या में होते तब तो उसका जीवन सचमुच ही बहुत आनंद का होता। किंतु मनुष्य से पाए आहार का मूल्य उसे कठोर परिश्रम करके चुकाना पड़ता है। दुर्गम जंगलों के भीतरी भागों, ढलवाँ पहाड़ियों और अगम्य खड्डों में जहाँ भी इच्छा हो वृक्ष उग आते हैं। इन वृक्षों को गिराकर और काट-छाँटकर जब उनके शहतीर बना दिए जाते हैं तो ये हाथी ही हैं जो इन विकट स्थानों में से उन्हें घसीटकर सड़कों के किनारों पर इकट्ठा करते हैं जहाँ से लारियाँ उन्हें ढोकर कस्बों और शहरों तक पहुँचाती हैं।

शहतीर आकार में पचास-पचास घनफुट और तोल में लगभग सत्ताईस-अट्ठाईस मन होते हैं। तिस पर ये सड़क से चार-चार किलोमीटर दूर दुर्गम नदी-नालों के किनारों, पहाड़ी ढलानों या अगम्य समतल भूमियों पर जहाँ-तहाँ बिखरे पड़े रहते हैं। हाथी की स्मरण-शक्ति इतनी तीव्र होती है कि सड़क से उन तक पहुँचाने के लिए वह जिस मार्ग या पगडंडी से जाता है वह उसे अच्छी तरह याद हो जाती है। शहतीरों को किस तरह सड़क तक लाना है इसका एक स्पष्ट मानचित्र उसके मन में पहले ही तैयार हो जाता है और इसीलिए वह बाधापूर्ण पेचीदे रास्ते में उन्हें घसीटकर सड़क तक ला सकता है।

शहतीर के पास पहुँचकर महावत 'हटो' कहकर हाथी से उतर जाता है और उसकी गरदन में लटकती हुई जंजीर का एक सिरा शहतीर के अगले सिरे में बाँध फिर हाथी पर आ बैठता है और उसे चलने का आदेश देता है। हाथी के चलते शहतीर उसके पीछे-पीछे घिसटने लगता है।

मगर इस प्रकार घसीअना सुगम नहीं होता क्योंकि कितनी ही प्रकार की बाधाएँ बीच में आ पड़ती हैं। शहतीर को बिना क्षति पहुँचाए सड़क तक पहुँचाने के लिए इन सभी बाधाओं को बहुत ही कुशलता से हटाने की आवश्यकता होती है। मान लीजिए, रास्ते में दो वृक्ष इस तरह बेढ़ंगेपन से खड़े हैं कि उनके बीच में शहतीर फँस सकता है।अगर यदि शहतीर को झटके के साथ खींचा जाएगा तो वह बीच में से टूट जाएगा। अतएव उसे निकालने के लिए हाथी को अपनी बुद्धि का प्रयोग करना पड़ता है। वह अपने मुँह में पड़े हुए रस्से को अपने पैर से इस हिसाब से झटकता है कि शहतीर सीधा होकर दोनों वृक्षों के बीच में से निकल जाए। थोड़ा ही आगे एक खाई आ पड़ती है, जो शहतीर की लंबाई से भी अधिक चौड़ा मुँह बाए खड़ी है। हाथी इस खाई में उतर जाता है और खाई के उपर निकले हुए शहतीर के हिस्से के चारों तरफ सूँड़ लपेटकर और घुटने मोड़कर इस तरह सहज में आगे धकेलता है कि शहतीर का आगे का हिस्सा सुरक्षित रूप से दूसरे किनारे के उपर आ जाता है। इस प्रकार खाई को पारकर वह फिर रस्से को अपने मुँह में पकड़ लेता है और शहतीर को आगे घसीटने लगता है। मार्ग की कितनी ही कठिन बाधाओं से निकलने के बाद शहतीर सड़क के किनारे पहुँच पाता है। मगर वास्तविक विस्मय तब होता है जब देखते हैं कि इतना घसीटे जाने के बाद भी छिल जाने के अतिरिक्त दूसरी कोई क्षति शहतीर को नहीं पहुँची है। क्या संसार में ऐसी कोई मशीन है। जो ये सब काम कर सके?

शहतीर को लक्ष्य पर पहुँचकर हाथी किसी वृक्ष के नीचे कुछ समय आराम करता है और फिर दूसरा शहतीर लाने के लिए जंगल में लौट जाता है। साँझ के चार बजे तक यही क्रम जारी रहती है ओर उसके बाद ही उस दिन का काम समाप्त होता है।

3. परमाणुयुग में सामाजिक चेतना

श्री नरेंद्र गोयल

सारांश:

हर युग में बड़े और छोटे लोगों की आर्थिक संपन्नता, सामाजिक प्रतिष्ठा तथा सांस्कृतिक स्तरों में अंतर रहा है। पर हर युग में बड़े और छोटे सभी लोगों की सामाजिक चेतना में और उस युग की तकनीकी तथा वैज्ञानिक प्रगति में भी उतना ही अंतर रहा है। ज़मीन गोल है और सूर्य के चारों ओर घूमती है। यह सिद्ध

होने के बाद भी सदियों तक कितने लोगों ने इस बात को नहीं माना। आज भी ऐसे व्यक्ति मिल जाएँगे जो आधुनिक नक्षत्र विज्ञान के बजाय पौराणिक या शास्त्रीय ज्योतिष को सच मानते हैं। किसी तथ्य का बोद्धिक प्रमाण ही हमें उसका विश्वास दिलाने के लिए काफ़ी नहीं है, क्योंकि मनुष्य तर्कशील पशु है, इस सिद्धांत का अंतिम अंश ही अधिक सच लगता है कि मनुष्य पशु अवश्य है, चाहे तर्कशील हो या न हो। इसीलिए नित नूतन आविष्कारों के बीच अंधविश्वास भी पलता रहा है, और स्वयं वैज्ञानिक तक संस्कार जन्य मान्यताओं में विश्वास करते रहे हैं। इस शताब्दी में मनोविज्ञान तथा अन्य समाजशास्त्रों की अपूर्व प्रगति होने के बाद भी, क्या आज हमारा आर्थिक, सामाजिक या राजनीतिक ढाँचा पहले से अधिक तर्क-संगत सिद्धांतों पर आधारित है? क्या आज का मानव अपनी व्यक्तिगत अथवा अंतर्राष्ट्रीय समस्याओं का हल, अपने पूर्वजों की अपेक्षा, अधिक वैज्ञानिक ढंग से निकालता है? नहीं! बल्कि आज हम इस नतीजे पर पहुँचे हैं कि साक्षरता, या उच्चतम शिक्षा तक व्यक्ति तथा समाज के वैज्ञानिक या नैयायिक मार्ग पर चलने की गारण्टी नहीं है।

हमारी वैज्ञानिक प्रगति क्षण-क्षण हमारी पार्थिव वस्तु-स्थिति को बदल रही है। और न सिर्फ हमारे सामाजिक संगठन को, वरन् हमारे मानसिक उपकरण को भी उसके अनुसार बदलना चाहिए। नहीं तो हमारे सामने नए नए प्रकार के संघर्ष आयेंगेः वर्ग संघर्ष, राष्ट्रीय या अंतर्राष्ट्रीय संघर्ष और अंततोगत्वा हमारे मन और हमारी अपनी बनायी हुई इस दुनिया के बीच में संघर्ष। यह संघर्ष बड़ा दुखदायी है क्योंकि मन और पदार्थ के बीच समन्वय के बिना तो शांति और सुख संभव नहीं है।

औद्योगिक क्रांति से मानव के रहन-सहन में परिवर्तन तो हुआ किंतु मनुष्य का दिमाग अधिक नहीं बदला। धार्मिक और नैतिक सिद्धांत व्यक्ति और राष्ट्रों के जीवन में अछूते ही रह गये। अब परमाणु-शक्ति की खोज और आविष्कारों से ऐसा लगता है कि मानव मस्तिष्क पर इनका प्रभाव पहले की सभी वैज्ञानिक क्रांतियों से अधिक पड़ेगा।

परमाणु शक्ति का पहला चमत्कार था परमाणु-बम। इसने जनसाधारण पर काफ़ी असर डाला, न सिर्फ इसलिए कि परमाणु और हाइड्रोजन बमों की शक्ति पौराणिक वज्रों और प्रलयंकर अस्त्रों की याद दिलाती है, वरन् इसलिए भी कि उनके तात्कालिक प्रभाव से अधिक उनके कालांतर प्रभाव है, जो मानव जीवन के प्रत्येक अंग में, प्रत्येक क्षण में सर्वनाशी सिद्ध हो सकते हैं। जापानी जनता के लिए हीरोशिमा से भी ज्यादा कठोर अनुभूति विकिरणशील वर्षा या विकिरणशील रेडियोएक्टिव मछलियाँ हैं। सहारा के रेगिस्तान में होनेवाले परमाणु-परीक्षणों की ओर से केवल अफ्रीका की काली जनता ही चिंतित न होगी, वरन् सभी वर्ण, जाति और वर्ग के लोग भयभीत होंगे। परीक्षण चाहे दक्षिणी ध्रुव के निकट अज्ञात अन्टार्टिक प्रदेश में किए

जाएँ या उत्तरी ध्रुव के समीप निर्जन साइबेरिया में, उनका डर समस्त मानवता के हृदय में समाया हुआ है। यहाँ तक कि उनके दिलों में भी जो परमाणु-परीक्षण करने या करवाने के जिम्मेदार हैं। इस प्रकार परमाणु-शक्ति ने पूर्व-पश्चिम, काले-गोरों को एक दूसरे के निकट ला दिया है। मानव मात्र की यह एकता वस्तुतः 'समान भय' के कारण है, किंतु यह समान भय समान साधना को जन्म देगा इसमें संदेह नहीं है।

विश्व आज दो विरोधी गुटों में जरूर बँटा हुआ है, किंतु दोनों को अपने-अपने विनाश का डर है। जब दोनों के पास इतनी सामग्री आज भी है कि वे सारी दुनिया को ध्वस्त कर सकते हैं, तब उस सामग्री को बढ़ाने से क्या लाभ? मुर्दों को जिंदा करके दोबारा मारना तो नादिरशाह के वश में भी नहीं था। तब दुनिया को दस बार ध्वस्त करने की शक्ति संचय करने से फायदा? अगले विश्व युद्ध में विजेता और विजित में भी कोई अंतर न होगा। दोनों ही डूबेंगे और साथ में न लड़नेवालों को भी ले डूबेंगे। इसीलिए विश्वयुद्ध किसी के भी हित में नहीं है। परमाणु-शस्त्रों से अब तक की समर नीति बिलकुल ही बदल गयी है। और दूरदेशों में अपनी साम्राज्य रक्षा में संलग्न राष्ट्र-नायक भी आज विश्व -युद्ध से डरते हैं --- दूसरी ओर उनके अपने देशों की जनता भी शांति चाहती है, क्योंकि और दूसरा कोई रास्ता नहीं है।

सारी दुनिया में शांति की यह उत्कट अभिलाषा, यह अदम्य प्रेरणा, परमाणु -युग का परिणाम है। यह 'शांति सम्मेलनो' mÒ भ वाणी नहीं है, केवल एक महान तथ्य की सूचना है, जिसका फल आगे हमें मिलेगा। अस्तित्व मात्र की रक्षा -- जीवित रहने की इच्छा तो बड़ी प्रबल है - मानव के अस्तित्व की रक्षा एक बड़ा प्रश्न बन गया है। और यह सबसे पहले वैज्ञानिकों के सम्मुख है। 14 वर्ष पहले वैज्ञानिक अपने कार्य को अपनी जिज्ञासा और बुद्धि के चमत्कार के रूप में ही देखता था। उसे अपनी सफलता के सामाजिक फल की चिंता न थी। समाज के प्रति अपने कर्तव्य का उसे भान न था। जैसे कलाकार अपने काव्य या चित्रों का स्वान्तः सुखाय सर्जन करता था, वैसे ही वैज्ञानिक भूतत्वों की खोज और नई वस्तु के निर्माण में ही अपनी साधना का लक्ष्य देखता था। विज्ञान से लाभ होता है या हानि, यह स्कूली बच्चों के लेख का विषय था; कभी कभी धर्माचार्यों या दार्शनिकों की मण्डली में भी इस पर चर्चा होती थी, किंतु वैज्ञानिक स्वयं इस बहस से दूर था।

वैज्ञानिक समाज-सेवक है, हत्यारा नहीं, यह बात जो नात्सी जर्मनी के वैज्ञानिकों की समझ में नहीं आई थी, अब अमरीकी और सोवियत वैज्ञानिकों की समझ में नहीं आ रही है, क्योंकि उनकी विनाश-बुद्धि का असर केवल 'शत्रु' पर नहीं, उन पर खुद पड़नेवाला है। परमाणु-शक्ति के विनाशकारी कालान्तर प्रभावों को चेतावनी देनेवाले स्वयं वैज्ञानिक हैं। यह पहला अवसर है जब जूलियो क्यूरी, हाडैन और जे.डी.बर्नल जैसे

प्रतिष्ठित वैज्ञानिक सामाजिक तथा अंतर्राष्ट्रीय व्यूहरचना में रुचि दिखाने लगे हैं। वैज्ञानिकों की यह सामाजिक चेतना आज बड़ी बात भले ही न मालूम हो, किंतु भविष्य में इसके परिणाम व्यापक होंगे। समाज का इतना महत्वपूर्ण अंग यदि मदान्ध शासकों की अनर्थकारी नीतियों के विरुद्ध अपनी आवाज उठाए तो यह राज्य की निरंकुशता पर तो आघात है ही, साथ ही जन-कल्याण की ओर एक मजबूत कदम है।

वैज्ञानिकों की सामाजिक चेतना के पीछे एक और भी बड़ा सूत्र है। परमाणु-शक्ति को पूरी तरह से समझना भी अभी संभव नहीं है; और वैज्ञानिक को इस बात का एहसास है कि उसका ज्ञान ओर उसका बनाया हुआ यंत्र उसके नियंत्रण से बाहर जा रहा है। आज जब हम चाँद को जीतने की कोशिश कर चुके हैं, ओर हमें एक ऐसे नए माया-जाल से बचाए जिससे हम मानव को ही सर्वशक्तिमान और प्रकृति का एकमात्र केंद्र न मान लें। ज्ञान यदि एक प्रकाशपुंज है, तो हमारे ज्ञान की परिधि जितनी बढ़ती है, उतना ही अपने अज्ञान से हमारा परिचय होता है।

औद्योगिक क्रांति, परिवहन और संचार के साधन और आधुनिक अंतर्राष्ट्रीय वाणिज्य ने 'एक दुनिया' अवश्य बना दी थी किंतु राष्ट्रों की परस्पर होड़ ने दिलों में सीमाएँ खड़ी कर रखी थीं। ये आज भी हैं, किंतु एक तो विश्वशांति की समान प्रेरणा ने उन सीमाओं को कमज़ोर बना दिया है, और दूसरे समान सामाजिक और आर्थिक अंतर्राष्ट्रीय आंदोलनों ने। इनसे भी ज्यादा, परमाणु युग में हमारी दुनिया को एक बना देने के कारण 'आकाश-यात्रा' है।

जब हम नया चाँद आसमान में चढ़ाते हैं, या नए उपग्रह निर्माण-करते हैं तो हमें अपनी पृथ्वी को एक ही समझना पड़ता है।

चंद्रलोक का यात्री पार्थिव रूप में ही नहीं, मानसिक रूप में भी एक नए लोक का प्राणी है। मृत्यु लोक के अपने पूर्वजों की बुद्धि उसके लिए व्यवधान सिद्ध होगी। यदि यह बात आज सुखद न लगे तो आइन्स्टाइन की सापेक्षिकता पर कोई पुस्तक पढ़ लीजिए जिसमें आपको पहले पृष्ठ पर चेतावनी दी गयी होगी कि इसे पढ़ने से पहले दिक्-काल, आकाश, आकार आदि के बारे में अपनी 'मानवोचित' धारणाओं को भूल जाइये। या फिर बीस साल बाद उन बच्चों से पूछिएगा जो आज 'स्पूतनिक' के माडेल से खेलते हैं, और चंद्रलोक के यात्रियों में अपना नाम लिखाने के लिए लाइन लगाते हैं।

4. जाँय और एल्सा का प्यार

श्रीमती पुष्पा भारती

सारांश:

जॉर्ज ऐडमसन केन्या के सीनियर गेम वार्डन थे। यानी उनका काम था, केन्या के जंगलों में चोरी-छिपे घुसकर शिकार खेलनेवालों से जंगली जानवरों की रक्षा करना ओर केन्या के निकट रहनेवाले आदिवासियों की नरभक्षी जानवरों से रक्षा करना। 1944 में, जब जॉर्ज ऐडमसन से उनका विवाह हुआ उसके बाद तो उनका यह प्रकृति प्रेम परवान चढ़ गया। जॉर्ज को अपने दफ़तरी काम से दूर-दूर जंगल में सफारी पर जाना होता था और जॉय हमेशा उनके साथ लग जाती थीं।

ऐसी ही एक सफारी पर जब वे गई थीं, तो वहाँ कुछ ऐसा घटित हुआ, जिसने उन्हें सारी दुनिया में मशहूर कर दिया और उनके जीवन में एक अनोखा अध्याय ही खोल दिया।

एक बोरन आदिवासी को नरभक्षी सिंह ने मार दिया था। तमाम सारे लोग जॉर्ज के पास प्रार्थना लेकर आए कि वे सिंह से उनका पीछा छुड़ा दें। उन लोगों ने कहा कि एक सिंह दो मादाओं के साथ पास की पहाड़ियों में रहता है और उनकी जान का गाहक बना हुआ है। ऐडमसन दंपत्ति उन दिनों इसिओलो में रहते थे, लेकिन आदिवासियों की फरियाद पर वे जंगल की भीतरी पहाड़ियों में नरभक्षी सिंह की तलाश में डेरा डाले थे।

एक दिन जॉय टेंट में थी और जॉर्ज लैंडरोवर गाड़ी में बैठकर जंगल के भीतर गए। और जब वह वापस आये तो जॉय भागी आई और देखा, जॉर्ज की गाड़ी में एक बड़े विशालकाय शेर की खाल पड़ी थी। शिकार के बारे में कुछ पूछें कि जॉर्ज ने गाड़ी की पिछली सीट की ओर इशारा किया। जॉय देखकर दंग रह गई कि वहाँ तो तीन प्यारे-प्यारे गोल-मटोल शेर के बच्चे एक-दूसरे के शरीर में अपना मुँह छिपाए परेशान से बैठे हैं। चित्तीदार उन के गोलों जैसे उन तीनों नन्हें बच्चों को देखते ही जॉय ने उठाकर उन्हें अपनी गोद में बिठा दिया। बेचारों की अभी आँख भी नहीं खुली थीं। मुश्किल से चार-पाँच दिन के ही होंगे। वक तीनों-के-तीनों जॉय ऐडमसन की गोद में कुलबुलाने लगे।

जॉर्ज ने पूरी कथा सुनाई। दरअसल आदिवासियों को जिस जगह पर नरभक्षी के होने का शक था, जॉर्ज अपने साथी अधिकारी मिस्टर केन के साथ वहाँ उसे खोजने गए थे। अचानक एक शेरनी ने पीछे से वार किया। वे लोग उसे मारना नहीं चाहते थे, पर वह जॉर्ज के इतने करीब आ गई थी कि मिस्टर केन को गोली

चलानी ही पड़ी। पर शेरनी मरी नहीं, घायल होकर भाग गई। उसके शरीर से टपकती खून की बँदों के सहारे रास्ता खोजते-खोजते वे दोनों उसके पीछे गए ओर एक बड़ी चट्टान के पीछे उसे खोज लिया। वह फिर इनकी ओर झपटी पर इस बार बच नहीं सकी। जब वह मरकर गिर पड़ी, तो जॉर्ज ने देखा कि उसके वक्ष तो दूध से भरे हूए हैं।

बेचारी ने अपने बच्चों की रक्षा में अपने प्राण दे दिए। वहीं चट्टान के नीचे एक खोह में उन्हें ये तीनों बच्चे मिल गए। और बस, यह सब सुनते ही उन तीनों मातृत्वहीन बच्चों के प्रति जॉय ऐडमसन का मन पूरी ममता से उमड़ आया। तुरंत शहर की ओर एक आदमी दौड़ा दिया गया कि जल्दी से जल्दी पाउडर दूध का डिब्बा और अच्छी बढ़िया निपलवाली दूध की बोतलें लाई जाएँ।

तीनों-के-तीनों बड़े सयाने और होशियार बच्चों की तरह माँ का कहना मानते हुए धीरे-धीरे बड़े होने लगे। जब वे जॉय की गोद में बैठकर अपनी नन्हीं-नन्हीं आँखें मूँदकर प्यारे गुदकारे पंजी में बोतल पकड़कर, नन्हीं-सी लाल-लाल जीभ निकालकर होठों के बीच निपल दबाकर दूध पीते, तो जॉय फूली नहीं समातीं। उन्होंने देखा कि तीनों ही बच्चे मादा थे। तीनों यद्यपि एक ही उम्र के थे, लेकिन एक बच्चा जरा बड़ा लगता था। दूसरा मंझोले कद काठी का और तीसरा मिरगिल्ला-सा था बहुत कमजोर।बड़े का नाम तो उन लोगों ने 'बिगवन' ही रहने दिया। दूसरा बच्चा ज़रा मसखरे किस्म का था। हर समय खीसें निपोरे रहता था। इसलिए उसका नाम 'लस्टिका' यानी मस्तराम रख दिया गया। मगर, जॉय ने तीसरे कमजोर बच्चे का नाम 'एल्सा' रखा था। एल्सा नाम से जॉय को किसी की याद आती थी। धीरे-धीरे तीनों शेर बच्चियाँ बड़ी होने लगीं। जायँ ने महसूस किया कि अब, जब वे चाटती हैं, तो उनकी जबान खुरखुरी लगती है। गोद में बैठती हैं तो उनका वजन भारी लगता है। ज्यों-ज्यों वे तीनों बड़ी होने लगीं। सोचा गया कि अब इन्हें किसी चिड़िया-घर को दे दें। लेकिन, एल्सा के शरीर से आती शहद की-सी सुगंध और उसका खास अंदाज से जॉय से लिपटना, ऐसा जादुई सुख देता था जॉय ऐडमसन को, कि उन्होंने बाकी दो को तो भेज दिया, लेकिन एल्सा को अपने पास ही रख लिया। एल्सा नाम उन्हें किसी की याद भी दिलाता था न! धीरे-धीरे एल्सा बड़ी होने लगी और अच्छी-खासी तंदुरुस्त कद्दावर शेरनी लगने लगी।

जार्ज और जॉय ने उसे खुद शिकार करके खाना सिखाया। उसे पहले कुछ घंटों के लिए, फिर एक दिन के लिए, फिर ज्यादा दिन के लिए , इस तरह धीरे-धीरे अपने से अलग जंगल में अकेला रहने को छोड़ा। छोड़ने के बाद वे जब भी कैंप पर वापस आकर एल्सा को आवाज देते, तो वह जहाँ भी होती, दौड़ी चली आती और अपना पूरा बोझ लिए-दिए दोनों का आलिंगन करने के लिए दौड़ पड़ती। देर तक उन्हें चाटतह

और गूँ.....गूँ..... की आवाजें निकालती रहती। जॉर्ज के हाथ से जी भरकर खाना खाती और जॉय से सटकर सो जाती। रात को सोते समय भी अपना एक पंजा उठाकर उनके शरीर पर रख लेती, ताकि वे उसे फिर छोड़ न जाएँ। अंत में, एक समय वह भी आया, जब जॉय ने बड़ी खुशी से यह जाना कि एल्सा को उसका प्रियतम भी मिल गया है। और एल्सा जी का दो चितकबरी उन के गोलों जैसे ननहें-मुन्ने बच्चे और एक तीसरा कमजोर बच्चा हुआ है जिसे देखकर जॉय को किसी की फिर याद आयी-एल्सा।

लेकिन, स्वंय जॉय ऐडमसन का जीवनचक्र जब पूरा घूमकर गोल हुआ, तो वह कैसी विचित्र विडंबना थी प्रकृति की। क्या था इन जंगलों में जिसके बिना जॉय अधूरी थी। किन जन्मों का नाता था उसका इन जंगलों से, कि वह यही बार-बार आकर सुकून पाती ओर आखिर अपनी आखिरी सांस भी इसी जंगल में लीं। आखिर वह उसकी भटकन ही रही हेगी न कि आस्ट्रिया में जॉय फ्रेडरिक विक्टोरिया गैनर नाम से जन्मी, शान-शौकत से भरे शहरी जीवन से }बकर अकसर वह गाँव की अपनी पैतृक जायदाद में पहुँच जाती थी और वहाँ के गेम कीपर के साथ भीतर जंगलों में जाकर लोमड़ी और हिरनों को देखकर फूली नहीं समाती थी! यों उसने संगीत की शिक्षा ली थी, बढ़िया टेलरिंग सीखी थी, मेटल क्राफट सीखा था, डाक्टरी की पढ़ाई भी की थी और 1935 में एक अमीर आस्ट्रियाई व्यापारी से उसकी शादी भी हो गई थी।

लेकिन दो साल बाद जब वह छुट्टियाँ मनाने केन्या गई थी, तो बस 'उस गजब के देश के प्यार में पड़ गई थी।' उसका जी व्यापारी पति के साथ नहीं लगा ओर उसने एक वनस्पति शास्त्री पीटर बैली से शादी कर ली।

एल्सा पर 'बोर्न फ्री' नामक पुस्तक लिखकर वह सारी दुनिया में जान-पहचाना नाम बन गयी थी। किमाब, संसार की प्रायः सभी भाषाओं में छपी। एल्सा पर फिल्म भी बनी। नाम और पेसा दोनों ही जॉर्ज ऐडमसन को भरपूर मिलने लगा। उसके बाद जॉय ने दो किताबें और लिखीं। 'लिविंग फ्री' और 'फॉर एवर फ्री'। जॉय ने अपनी अटूट आय को 'एल्सा वाइल्ड एनिमल अपील' नामक संस्था में लगा दिया। जॉय ने जिंदगी में अनेक तरह के जानवरों से दोस्ती की थी, वे कहती थीं---जानवरों में एक खास किस्म का विचारों का आदान-प्रदान होता है और वह खास किस्म का भाव-संप्रेषण उनके और जानवरों के बीच होता था। कहा करती थीं, वैसी भावाकुलता, वैसी ही संवेदनशीलता मुझे अपनी कौम-इंसानों में मिलती ही नहीं।

अनेक प्रकार के जीवों का अध्ययन पर लगी थीं, एल्सा की तरह उन्होंने एक चीते के बच्चे का भी पालन-पोषण किया था। उसका नाम रखा था 'पिप्पा'। पिछले दिनों वे पालतू पिप्पा को जंगल-जीवन का आदी

होना सिखा रही थीं। चीतों के व्यवहार और जीवन पर एक पुस्तक भी पूरी करने में लगी थीं। थोड़े ही दिन बाद उनकी सत्तरवीं वर्षगाँठ आनेवाली थी।

3 जनवरी 1980, शामको साढ़े सात बजे वे गई थीं और जब रेडियो से खबरें आने लगीं तथा तुरंत खोज टोली भेजी गई और थोड़ी दूर पर जॉय का बुरी तरह क्षत-विक्षत निर्जीव शरीर पड़ा मिला। एक बाँह चींथकर तोड़ दी गयी थी और ममतामयी जॉय का वक्ष खूँदकर रौंद डाला गया था। जानकार अधिकारी ने कहा, जरूर ही यह किसी शेर का काम है।

चालीस साल से भी ज्यादा अपने जीवन-वर्ष जॉय ने जिस जंगल और जंगली जीवों के हाथों वे अपना जीवन-चक्र पूरा करके हमेशा-हमेशा के लिए सो गई। इसे भाग्य का क्रूर मजाक कहें या प्रकृति की विडंबना।

5. आत्म-निर्भरता

पंडित बालकृष्ण भट्ट

सारांश: आत्म-निर्भरता (अपने भरोसे पर रहना) ऐसा श्रेष्ठ गुण है कि जिसके न होने से पुरुष में पौरुषेयत्व का अभाव कहना अनुचित नहीं मालूम होता। जिनको अपने भरोसे का बल है, वे जहाँ होंगे, जल में तूम्बी के समान सब के उपर रहेंगे। शारीरिक बल, चतुरंगिणी सेना का बल, प्रभुता का बल, ऊँचे कुल में पैदा होने का बल, मित्रता का बल, मंत्र-तंत्र का बल इत्यादि जितने बल हैं, निज बाहुबल के आगे सब क्षीण बल हैं। आत्म-निर्भरता की बुनियाद यह बाहुबल सब तरह के बल को सहारा देनेवाला ओर उभारने वाला है।

यूरोप के देशों की जो इतनी उन्नति है, तथा अमेरिका, जापान आदि जो इस समय मनुष्य-जाति के सरताज हो रहे हैं, इसका यही कारण है कि उन देशों में लोग अपने भरोसे पर रहना या कोई काम करना अच्छी तरह जानते हैं। हिन्दुस्तान का जो सत्यानाश है, इसका यही कारण है कि यहाँ के लोग अपने भरोसे पर रहना भूल ही गए।

किसी ने अच्छा कहा है---

''दैव-दैव आलसी पुकारा''

ईश्वर भी सानुकूल और सहायक उन्हीं का होता है, जो अपनी सहायता अपने आप कर सकते हैं। अपने आप सहायता करने की वासना आदमी में सच्ची तरक्की की बुनियाद है। अनेक सुप्रसिद्ध सत्पुरुषों की जीवनियाँ इसके उदाहरण ही तो हैं। प्रत्येक देश या जाति के लोगों में बल और ओज तथा गौरव और महत्व

के आने का आत्म-निर्भरता सच्चा द्वार है। बहुधा देखने में आता है कि किसी काम के करने में बाहरी सहायता इतना लाभ नहीं पहुँचा सकतीं, जितनी आत्म-निर्भरता।

समाज के बंधन में भी देखिए, तो बहुत तरह के संशोधन सरकारी कानूनों के द्वारा वैसे नहीं हो सकते, जैसे समाज के एक एक मनुष्य के अलग-अलग अपने संशोधन अपने आप करने से हो सकते हैं।

कड़े से कड़े नियम आलसी समाज को परिश्रमी, अपव्ययी को परिमित व्ययशील, शराबी को संयमी, क्रोधी को शांत या सहनशील, सूम को उदार, लोभी को संतोषी, मूर्ख को विद्वान दर्पान्ध को नम्र, दुराचारी को सदाचारी, कदर्य को उन्नतमना, दरिद्र-भिखारी को आढ्य, भीरु-डरपोक को वीर-धुरीण, झूठे-गपोड़िये को सच्चा, चोर को सहनशील, व्यभिचारी को एक-पत्नी-व्रतधारी इत्यादि नहीं बना सकते किंतु ये सब बातें हम अपने ही प्रयत्न और चेष्टा से अपने में ला सकते हैं।

जातीय गुणों या अवगुणों को सरकार कानून के द्वारा रोक या जड-मूल से नष्ट-भ्रष्ट नहीं कर सकती, वे किसी दूसरी शक्ल में न सिर्फ फिर से उभड़ आवेंगे वरन् पहले से ज्यादा तरोताजगी और हरियाली की हालत में हो जाएँगे। जब तक किसी जाति के हर एक व्यक्ति के चरित्र में आदि से मौलिक सुधार न किया जाय, तब तक पहले दर्जे का देशानुराग और सर्वसाधारण के हित की वांछा सिर्फ कानून के अदलने-बदलने से, या नए कानून के जारी करने से, नहीं पैदा हो सकती।

पुराने लोगों से जो चूक और गलती बन पडी है, उसी का परिणाम वर्तमान समय में हम लोग भुगत रहे हैं। उसी को चाहे जिस नाम से पुकारिए, यथा जातीयता का भाव जाता रहा, एकता नहीं है, आपस की सहानुभूति नहीं है, इत्यादि। तब पुराने क्रम को अच्छा मानना और उसपर श्रद्धा जमाए रखना हम क्योंकर अपने लिए उपकारी और उत्तम मानें। हम तो इसे निरी चंडूखाने की गप समझते हैं कि हमारा धर्म हमें आगे नहीं बढ़ने देता अथवा विदेशी राज से शासित हैं, इसीसे हम उन्नति नहीं कर सकते।

वास्तव में सच पूछो तो आत्म-निर्भरता अर्थात् अपनी सहायता अपने आप करने का भाव हमारे बीच है ही नहीं। यह सब हमारी वर्तमान दुर्गति उसी का परिणाम है। बुद्धिमानों का अनुभव हमें यही कहता है कि मनुष्य में पूर्णता विद्या से नहीं वरन् काम से होती है। प्रसिद्ध पुरुषों की जीवनियों के पढ़ने से ही नहीं, वरन् उन प्रसिद्ध पुरुषार्थी पुरुषों के चरित्र का अनुकरण करने से मनुष्य में पूर्णता आती है।

यूरोप की सभ्यता, जो आजकल हमारे लिए प्रत्येक उन्नति की बातों में उदाहरण-स्वरूप मानी जाती है, एक दिन या एक आदमी के काम का परिणाम नहीं है। जब कई पीढ़ी तक देश-का-देश ऊँचे काम, ऊँचे विचार और ऊँचे वासनाओं की ओर प्रबल-चित्त रहा, तब वे इस अवस्था को पहुँचे हैं। वहाँ के हर-एक संप्रदाय, जाति

या वर्ण के लोग धैर्य के साथ धुन बाँध के बराबर अपनी-अपनी उन्नति में लगे हैं। नीचे-से नीचे दर्जे के मनुष्य-किसान, कुली, कारीगर आदि-और ऊँचे-से-ऊँचे दर्जेवाले-कवि, दार्शनिक, राजनीतिज्ञ सबों ने मिलकर जातीय उन्नति को इस सीमा तक पहुँचाया है। एक ने एक बात को आरंभ कर उसका ढाँचा खड़ा कर दिया, दूसरे ने उसी ढाँचे पर आरूढ़ रहकर दर्जा बढ़ाया, इसी तरह क्रम-क्रम से कई पीढ़ी के उपरांत वह बात, जिसका केवल ढाँचा मात्र पड़ा था, पूर्णता और सिद्धि की अवस्था तक पहुँच गई।

आत्म-निर्भरता के संबंध में जो शिक्षा हमें खेतिहर, दुकानदार, बढ़ई, लोहार आदि कारीगरों से मिलती है, उसके मुकाबले में स्कूल और कालेजों की शिक्षा कुछ नहीं है, और यह शिक्षा हमें पुस्तकों या किताबों से नहीं मिलती वरन् एक-एक मनुष्य के चरित्र, आत्म-दमन, दृढ़ता, धैर्य, परिश्रम, स्थिर अध्यवसाय पर दृष्टि रखने से मिलती है। इन सब गुणों से हमारे जीवन की सफलता है। ये गुण मनुष्य जाति को उन्नति के छोर हैं और हमें इस जन्म में क्या करना चाहिए, इसके सारांश हैं।

बहुतेरे सत्पुरुषों के जीवन-चरित्र धर्म-ग्रन्थों के समान हैं, जिनके पढ़ने से हमें कुछ-न-कुछ उपदेश जरूर मिलता है। बड़प्पन किसी जाति-विशेष या खास दर्जे के आदमियों के हिस्से में नहीं पड़ा। जो कोई बड़ा काम करे या जिससे सर्वसाधारण का उपकार हो, वही बड़े लोगों की कोटि में आ सकता है। वह चाहे गरीब या छोटे दर्जे का क्यों न हो, बड़े-सा-बड़ा है। वह मनुष्य के तन में साक्षात् देवता है।

6. बहू की बिदा

श्री विनोद रस्तोगी

पात्र:

जीवनलाल -- एक धनी व्यापारी; अवस्था 47 वर्ष।

राजेश्वरी -- जीवनलाल की पत्नी; अवस्था 44 वर्ष।

रमेश -- जीवनलाल का पुत्र; अवस्था 22 वर्ष।

कमला -- रमेश की पत्नी; अवस्था 19 वर्ष।

प्रमोद -- कमला का भाई; अवस्था 23 वर्ष।

कथासार:

'बहू की बिदा' एकांकी में हमारे सामाजिक जीवन के बहुत बड़े अभिशाप 'दहेज़' की समस्या की बड़े मार्मिक ढंग से उभारा गया है। इस समस्या ने हमारे देश के असंख्य परिवारों का जीवन नरकवत् बना दिया

है। आए दिन कितनी ही बहुओं को अपने प्राण खोने पड़ते हैं, परन्तु दहेज का लोभी पशु किसी प्रकार सन्तुष्ट नहीं होता।

इस एकांकी में चित्रित जीवनलाल एक ऐसे ही लोभी व्यक्ति हैं जो प्रमोद की बहन कमला को अपनी बहू बनाकर तो ले आए हैं, परन्तु अब बिना पाँच हज़ार रुपये लिए उसे उसकी माँ के घर पहला सावत बिताने के लिए भेजने को तैयार नहीं हैं। क्योंकि दहेज पूरा नहीं दिया गया था। कम दिया गया था जो उसकी बिरादरी में कम है। तो प्रमोद कहता है कि कमला का पति रमेश यहाँ होता तो कुछ अलग होता। जीवनला कहता है कि कुछ नहीं होता क्योंकि पिछले महीने उसने भी अपनी बेटी गौरी की शादी की है। उसने वह खातिरदारी की कि बारात वाले दंग रह गए; इतना दहेज दिया कि मोहल्ले-टोले वालों ने दाँतों तले उँगली दबा ली। इसीलिए बेटीवाला होकर भी उसकी मूँछ आज भी ऊँची है और रमेश गया है गौरी की बिदा कराने। घंटे भर में ही वह प्रेमोद के सामने ही उसे लेकर आ जाएगा। उसकी बेटी पहला सावन यहाँ बिताएगी। फिर जीवनलाल कहता हैं कि बहू और बेटी में बहुत अंतर है। प्रमोद अपनी बहन को देखकर कहता है कि अगली बार वह 5000 रुपये लेकर उसे ले जायेगा। प्रमोद बहन से पूछता है कि वह दुखी तो नहीं है तो वह कहती है कि गौरी के साथ वह पहला सावन बितायेगी। इतने में राजेश्वरी आती है और उस 5000 रुपये के कुद के प्रमोद को तिजोरी से निकाल कर देने की सोचती है। इतनी में रमेश आता है और जीवनलाल अपनी बेटी को खोजता है मगर दहेज कम देने के कारण ससुराल से गोरी को बिदा नहीं करने कि बात रमेश कहता है तो जीवनलाल को दुख का एहसास होता है और वह प्रमोद से अपनी गलती के लिए माफी माँगता है।

दहेज की यह समस्या अपना वास्तविक रूप उस समय दिखाती है जब जीवनलाल को भी उसी त्रासपूर्ण स्थिति का सामना करना पड़ता है। जीवनलाल का पुत्र रमेश अपनी बहन गौरी को भी उसकी ससुराल से दहेज के कारण ही बिदा नहीं करा पाता। ऐसी स्थिति में जीवनलाल की आँखें खुलती हैं।

यह एकांकी हमारे सामाजिक जीवन की अत्यन्त दूषित प्रथा की ओर संकेत करता है तथा हमें मानवीय स्तर पर बहुत कुछ सोचने के लिए बाध्य करता है।

Unit-2

Short Stories

गल्पसन्चयन

1. लाल अंगारों की मुसकान – श्री कन्हैयालाल मिश्र'प्रभाकर'

एक दिन रणथम्भौर के राणा हमीर दरबार में बैठे राज-काज देख रहे थे कि किसी ने पुकारा ''मैं आपकी शरण आया हूँ, महाराज।'' हमीर ने देखा कि एक बहादूर मुसलमान सामने खडा है। उसने बताया-''मैं बादशाह अलाउद्दीन खिलजी का खादिम हूँ। राजा के कोप का शिकार हूँ। मृत्यु के भय से जेल से फरार होकर आपकी शरण में आया हूँ।'' उसका नाम था- माहमशाह।

महाराज हमीर ने माहम से पूछा कि दिल्ली और रणथम्भौर के बीच कई राजपूत राज्य हैं, तुम उनमें क्यों नहीं गये? माहम ने कहा-''मैं सबके दरवाजे गया। सिर्फ सहानुभूति मिली शरण नहीं। सब खिलजी से विरोध मोल लेने तैयार नहीं थे। हमीर के दरबारियों ने उसे शरण देने का विरोध किया। हमीर ने मान-मर्यादा तथा कर्तव्य-पालन का ध्यान रखते हुए माहम को शरण दे दी। यह बात अलाउद्दीन खिलजी तक पहुँची। उसने हमीर को संदेश भिजवाया- माहम को मेरे हवाले करके क्षमा-याचना करो। हमीर ने साफ-साफ इनकार कर दिया।

अलाउद्दीन ने रणथम्भौर को घेर लिया। एक ओर शाही फौजें थीं, दूसरी ओर आन पर मिटनेवाले राजपूत। घमासान लडाई हुई। एक दिन किले में खाने का सामान समाप्त हो गया। माहम ने प्रार्थना की कि उसे अलाउद्दीन को सौंपकर सुलह कर ली जाए। पर हमीर ने नहीं माना।

निश्चय किया गया कि स्त्रियाँ जौहर करेंगी और राजपूत किले का द्वार खोलकर अंतिम लडाई लडेंगे- जिसका स्पष्ट आशय था- आत्माहुति। अगले दिन स्त्रियों ने श्रृंगार किया। वीर पतियों से बिदा लेकर एक-एक करके सब चिता में कूद पडीं। किले का द्वार खोल दिया गया। आत्मदान के यज्ञ से रणथम्भौर के योद्धा कूद पडे। माहम और हमीर साथ-साथ आगे बढे और काल बनकर बरसे। दूसरे सिपाही खून की आखिरी बूंद तक लड मरे। ये बलिदान, ये कुरबानियाँ वीरता के इतिहास में बेजोड हैं।

2. अमीरों के भगवान–चन्द्रगुप्त विद्यालंकार

राजीव छे साल का लड़का था।Ò वह त्योहार का दिन था। राजीव सुबह जल्दी उठ गया था। माँ ने कहा- आज बाजार चलेंगे। आज शामको घर में नये भगवान की स्थापना होगी। आओ, पुराने भगवान की पूजा कर लें। राजीव जल्दी जाने को उत्सुक था। नये कपडे, भर पेट मिठाई, पटाखे, आतिशबाजियाँ आदि को सोचकर वह अत्यधिक खुशी का अनुभव करता था।

राजीव ने माँ से पूछा-- ''क्या भगवान भी नये और पुराने होते हैं?'' माँ ने कहा-- ''भगवान तो सदा नये हैं, साथ-साथ सदा पुराने भी हैं।'' पूजा के बाद माँ राजीव को बाजार ले गयी। पहले हलवाई से मिठाई खरीदी। फिर राजीव को खिलौने की एक बडी दूकान पर ले गयी। खिलौनों का पूरा बाजार देखकर राजीव बहुत खुश हुआ। उसने मिट्टी और लकडी के कुछ खिलौने खरीदे। अचानक राजीव की निगाह देवी-देवताओं की मूतियों पर गई। माँ ने कहा-- ''यही तो नये भगवान हैं।''

दूकान के पास एक कार आ रुकी। एक भद्र महिला और उसकी कन्या नीचे उतरीं। भद्र महिला ने लक्ष्मी की सुंदर मूर्ति खरीदी। मूर्ति तो नकली संगमरमर से बनी हुई थी। राजीव ने वह भारी मूर्ति एकाएक उठा ली और गोद में रखकर कहा-- माँ, हम तो यही भगवान लेंगे। भद्र महिला ने झपटकर वह मूर्ति छीन ली और क्रोध भरे स्वर में कहा-- ''बदतमीज कहीं का।'' बेचारा राजीव सन्न-सा रह गया। राजीव को रोते हुए देखकर माँ ने कहा-- ''हम गरीबों के लिए संगमरमर का भगवान नहीं है। हमारे लिए तो मिट्टी का भगवान है।'' राजीव को अधिक चीजें मिलीं। उसे खुश करने के लिए माँ ने लक्ष्मी की एक पीतल की मूर्ति खरीद दी। माँ-बेटे शहर की रोशनी देखने निकले। सारा शहर सजाहुआ था। प्रकाश और आह्लाद का त्योहार देखकर राजीव का जी खुश हो गया। लक्ष्मीनारायण का मंदिर चमचमा रहा था। दोनों भगवान के दर्शन करने अंदर गये। राजीव ने उल्लास के साथ कहा-- ''यह मिठाई हम भगवान पर चढ़ा देंगे माँ।'' दोनों भगवान की मूर्ति के सामने आये। राजीव यकायक उस मूर्ति को पहचान गया। मिठाई का डिब्बा हाथ से गिर गया और आतंकित स्वर में वह चिल्ला उठा--- ''माँ, यह तो वही संगमरमर का भगवान है।'' राजीव उस अमीर भगवान को भयभीत भाव से देख रहा था।

3. हींगवाला–श्रीमती सुभद्राकुमारी चाहान

हींगवाला श्रीमती सुभद्राकुमारी चौहान की भाव भरी कहानी है। हिन्दु-मुसलमान एकता को ध्यान में रखकर यह कहानी लिखी गयी है। माता की ममता इससे जगमगा उठती है।

हींगवाला लगभग 35 साल का एक खान था। वह सावित्री को अम्मा कहकर पुकारता था। सावित्री के एक बेटी और दो बेटे थे। हींगवाला आकर बैठ गया और कहने लगा--- ''अम्मा, हींग तो लो। मैं अपने देश को जाता हूँ, बहुत दिनों में लौटूँगा।'' सावित्री बोली-- हींग तो मेरे पास ज्यादा पडी है, अभी नहीं चाहिए। खान तो ध्यान दिये बिना हींग तौलने लगा। इसपर सावित्री के बच्चे बहुत नाराज हुए। छोटे बच्चे ने पुडिया उठाकर फेंकते हुए कहा-- ले जाओ, हमें नहीं लेना है।

सावित्री ने हींग की पुडिया उठा ली और पाँच रुपये दे दिये। खान सलाम करके चला गया। बच्चों को माँ की यह बाम अच्छी नहीं लगी। वे हठ करने लगे कि हमको भी पैसे दो।

कई महीने बीत गए। सावित्री की हींग सब समाप्त हो गयी। इसी बीच होली आयी। हिन्दू-मुसलमानों में दंगा हो गया। मरनेवालों में दो खान भी थे। सावित्री कभी-कभी सोचती-- हींगवाला खान तो नहीं मार डाला गया? न जाने क्यों उसे हींगवाले खान की याद प्रायः आ जाया करती थी। एक दिन अचानक हींगवाला घर में आया तो सावित्री फूल उठी। सावित्री बोली-- ''खान, तुम हमारे चले आए। तुम्हें डर नहीं लगा? उसने हींग दी और कहा पैसा फिर आकर ले जाऊँगा।

दशहरा त्योहार उत्साह से मनाया गया। सावित्री के बच्चों ने कहा-- हम भी काली का जुलूस देखने जाएँगे। सावित्री को यह बिलकुल पसंद नहीं था। बच्चे हठ करते थे। उसे लाचार होकर नौकर रामू के साथ बच्चों को भेजना पडा। देखते-देखते दिन ढल गया, अंधेरा बढने लगा, पर बच्चे न लौटे। पता चला कि दंगा हो गया। सावित्री अत्यधिक बेचैन हुई। उसे अपने पर क्रोध आ रहा था। वह पागल-सी हो गयी। रात हो गयी, पर बच्चों का पता नहीं। सावित्री हताश हो गयी और फूटफूटकर रोने लगी। इसी समय उसे वही चिरपरिचित स्वर सुनसई पडा-- अम्मा।

सावित्री दौड़कर बाहर आयी। उसने देखा कि तीनों बच्चे खान के साथ सकुशल लौट आए हैं। खान ने कहा-- ''अम्मा, वक्त अच्छा नहीं, बच्चों को ऐसी भीड-भाड में बाहर न भेजा करो।'' बच्चे दौड़कर माँ से लिपट गए। इस प्रकार विधर्मी होते हुए भी हींगवाला सावित्री के घर में एक सदस्य बन गया। हाँ, माता की ममता का नहीं कोई मोल।

4. आदमी खशी खोज लेगा–श्री कमलेश्वर

वह हज्जाम भी बड़ा दिलचस्प आदमी था। लेखक को वह शेव करता था साथ-साथ सिगरेट तथा बादाम भी लाता था। लेखक ने उसे कभी उदास या परेशान नहीं देखा। शेव करते-करते वह बेसिर-पेर की बातें छेड़ देता था जिसका कोई सदंर्भ ही न हो। वह कहीं की बात कहीं जोड़ देता था। वह गरीब था, फिर भी जीवन के संबंध में उसका व्यक्तिगत दृष्टिकोण था। उसने एक दिन कहा-- ''मुसीबतें और परेशानियाँ सभी को हैं। कौन ऐसा है जो दुनिया की चक्की में नहीं पिसता, साब।'' उसकी यह बात लेखक कभी नहीं भूल सकते थे।

हज्जाम आगे भी कहता गया-- ''जिंदगी में जो छोटी-छोटी खुशियाँ हैं उन्हें देखें तो गम और मुसीबतें छोटी दिखाई पडती हैं। आदमी हर हालत में अपनी खुशी का सामान जुटा लेता है, दुखी रहना उसकी फितरत में नहीं।''

एक दिन शेव करते-करते वह बोला-''एक बार कबालियों ने हमला किया था। सब भागने लगे। सामान छूट जाता पर आदमी बीबी नहीं छोड पाया। पर हम गरीब लोग बड़ी मस्ती में थे। श्रीनगर की तरु गोलियाँ गिर रही थीं, पर हमारे यहाँ शादियों की धूम थी। उधर बम का धडाका होता इधर कहकहा लगता। श्रीनगर अंधा पडा था। हमारे यहाँ मोमबत्तियों केतले निकाह पढाया जा रहा था। हमारी फौज लड रही थी, हमें डरना क्या? मौत के साये में बीबी तो मिल ही गयी।''

अपने पैसे लेकर वह चला गया। उससे फिर मिलने का मौका नहीं मिला। लेखक भी फिर पहलगाम के लिए रवाना हुए। वह अधूरा चित्र स्मृति में अटका हुआ है। अधूरा इसलिए है कि हज्जाम के साथ बैठकर बातें सुनने को मन चाहता है। उसके अमृत वाक्य को लेखक कभी नहीं भूल सकते। ''आदमी अपनी खुशी खोज ही लेगा।'' जब-जब वे इसे सोचते हैं तब लेखक को बडी ताकत मिलती है।

5. स्नह का दण्ड–श्रीमती लज्जा धवन

शिवशंकर और रामशंकर सेठ वंशीधर के पुत्र थे। दोनों भाइयों में परस्पर बड़ा स्नेह था तथा एक दूसरे के लिए ममता थी। छोटा भाई रामशंकर बड़े भाई को पितृतुल्य मानता था। सम्मिलित परिवार था-- शिवशंकर के तीन पुत्र और दो पुत्रियाँ थीं, रामशंकर के एक ही पुत्री थी। सभी बच्चे शिवशंकर को ही पिता समझते थे। सगे-संबंधी मित्र-बंधु उनके घर की इस एकता पर ईर्ष्या करते थे।

किंतु दिन सदा एक से नहीं जाते। रामशंकर के ससुरालवाले उसकी संपत्ति को ललचाई दृष्टि से देखने लगे। श्रीपत रामशंकर का साला था। उसने अपनी बहन कमला को भड़काना शुरु कर दिया। धीरे-धीरे घर पर ससुरालवालों का अगमन प्रारंभ हो गया। कमला ने पति के कान भरने शुरु कर दिये। रामशंकर के भी कपट-कपाट खुलने से लगे।

एक दिन रामशंकर ने अपने भाई से कहा-- ''मेरा बंटवारा कर दीजिए। मैं अब अलग रहना चाहता हूँ।'' शिवशंकर थोड़ी देर स्तब्ध होकर चुप रहे। बहुत समझाने पर भी रामशंकर रटता रहा-- आप मेरा बंटवारा की दीजिए।

तीसरे दिन शिवशंकर ने अपने भाई को बुलाकर बंटवारे का कागज हाथ में दिया। शिवशंकर ने कहा--किसी वकील की जरूरत नहीं; अगर कुछ परिवर्तन चाहते हो तो कर सकते हो। रामशंकर ने उसे पढा। उसमें लिखा था--''मैं सारी संपत्ति भाई रामशंकर को देता हूँ। गाँव में जो मेरे पूर्वजों की हवेली है उसपर मेरा ही अधिकार रहेगा। अपने गुजारे के लिए मैं आजीवन इस सारी संपत्ति से पचास रुपये पाने का अधिकारी रहूँगा। रामशंकर को यह अधिकार रहेगा कि वह मेरे पुत्रों को चाहे कुछ दे या न दे। कल से पूरा अधिकार रामशंकर का होगा और मैं इस घर को छोड़ दूँगा।

रामशंकर पढ़कर सन्न हो गया। उसकी आँखें खुल गयीं। वह भाई के चरणों पर गिरकर रोया, गिड़गिड़ाया, प्रार्थना की, किंतु शिवशंकर कागज को इंच भर भी बदलने को तैयार न हुए। सब कुछ रामशंकर को सौंपकर ग्राम चले गये। यह था स्नेह का दण्ड।

Unit - 3
Grammar and Comprehension
3. व्याकरण

1. संज्ञा किसे कहते हैं? उसके कितने मुख्य भेद हैं? उदाहरण के साथ समझाइए।

संज्ञा वह विकारी शब्द है जो किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान या भाव के नाम को बतावे। जैसे-- मनुष्य, किताब, लोटा, दिल्ली, सुंदरता आदि।

विशेष --- संज्ञा केवल नाम को ही कहते हैं न कि वस्तु को। जैसे -- 'नदी नाम' ही संज्ञा है 'नदी वस्तु' संज्ञा नहीं है।

संज्ञा के चार मुख्य भेद हैं---

1. व्यक्तिवाचक, 2. जातिवाचक, 3. समूहवाचक और 4. भाववाचक।

1. **व्यक्तिवाचक संज्ञा** --- व्यक्तिवाचक संज्ञाएँ वे हैं जिनसे एक ही व्यक्ति, वस्तु या स्थान का बोध होता है, जैसे -- राम, इलाहाबाद, गंगा आदि।

2. **जातिवाचक संज्ञा** --- जातिवाचक संज्ञाएँ वे हैं जिनसे एक ही जाति के सब पदार्थों का समान रूप से बोध होता हो। जैसे -- पुरुष, सिंह, पुस्तक, शहर आदि।

3. **समूहवाचक संज्ञा** --- समूह वाचक संज्ञाएँ वे हैं जिनसे किसी वस्तु के समूह का बोध होता है। जैसे --- सेना, सभा, मंडली, टोली, कक्षा, भीड़ आदि।

4. **भाववाचक संज्ञा** --- भाव वाचक संज्ञाएँ वे हैं जिनसे पदार्थों के धर्म, गुण, दोष, व्यापार या भावों का बोध होता हो। जैसे---

धर्म, गुण, दोष --- मिठास, सुंदरता, नीचता आदि।
अवस्था --- लड़कपन, यौवन, दासता, स्वतंत्रता आदि।
व्यापार --- चोरी, डकैती, पढ़ाई, दौड़ आदि।
भावना --- हर्ष, शोक, भय, क्रोध आदि।

2. भाववाचक संज्ञाएँ कैसे बनती हैं?

जातिवाचक संज्ञा, विशेषण, क्रिया शब्दों के अंत में ना, पन, पा, ह, वट, ता को जोड़ने से भाववाचक संज्ञाएँ बनती हैं। जैसे---

ना --- लिखना, पढ़ना, सुनना, देखना आदि।

पन --- लड़कपन, बचपन आदि।

पा --- बुढ़ापा आदि।

हट --- चिल्लाहट, घरबराहट आदि।

वट --- लिखावट, सजावट आदि।

ता --- सुंदरता, धीरता, वीरता, कायरता आदि।

3. भाववाचक संज्ञाएँ किन-किन शब्दों से बनती हैं? उदाहरण के साथ लिखिए।

भाववाचक संज्ञाएँ बहुधा तीन प्रकार के शब्दों से बनती हैं।

1. जातिवाचक संज्ञा से:--

मानव	--	मानवता	दास	--	दासता
वीर	--	वीरता	पशु	--	पशुता
विद्वान	--	विद्वत्ता	पंडित	--	पंडिताई
मनुष्य	--	मनुष्यत्व	बूढ़ा	--	बुढ़ापा
जवान	--	जवानी	लड़का	--	लड़कपन
बच्चा	--	बचपन	आदि।		

2. विशेषण से:--

अच्छा	--	अच्छाई	भला	--	भलाई
साफ़	--	सफ़ाई	चौड़ा	--	चौड़ाई
लंबा	--	लंबाई	गोल	--	गोलाई
सफेद	--	सफेदी	गरम	--	गरमी

कठोर	--	कठोरता	सुंदर	--	सुंदरता
बड़ा	--	बड़प्पन	काला	--	कालापन
पतला	--	पतलापन	मीठा	--	मिठास
मोटा	--	मुटापा	आदि।		

3. सर्वनाम से:-- अपना --- अपनापन

4. क्रिया से:-

खेलना	--	खेल	गाना	--	गायन
घबरान	--	घबराहट	चढ़ना	--	चढ़ाई/चढ़ाव
चलना	--	चाल, चलन	ठहरना	--	ठहराव
दौड़ना	--	दौड़	बनना	--	बनावट
बहना	--	बहाव	मिलना	--	मेल/मिलाप
सजाना	--	सजावट	सींचना	--	सिंचाई
हँसना	--	हँसी	आदि।		

5. अव्यय से:-

सम	--	समता	बराबर	--	बराबरी
पीछे	--	पिछड़ापन	दूर	--	दूरी
खूब	--	खूबी	अधिका	--	अधिकता
कम	--	कमी	सच	--	सचाई

4. भाववाचक संज्ञाएँ किन वस्तुओं का नाम होती हैं?

भाववाचक संज्ञाएँ निम्न वस्तुओं का नाम होती हैं---

1. गुणों के, जैसे -- सुंदरता, कठोरता, कालापन, मुटापा आदि।
2. रोगों के, जैसे -- ज्वर, क्षय, विसूचिका आदि।
3. मन के भावों के, जैसे -- राग, द्वेष, दयालुता, कृपा, क्रोध आदि।
4. समय या समय के विभागों से, जैसे -- रात, दिन, महीना, सुबह, शाम, वर्ष आदि।

5. विद्याओं के, जैसे -- व्याकरण, न्याय, ज्योतिष, गणित, इतिहास आदि।

6. कामों के, जैसे -- लड़ाई, भाग, दौड़ आदि।

विशेष -- भाववाचक संज्ञाओं के अंत में त्व, ता, पन, पा, हट, वट, ई आदि जुड़े रहते हैं। किन्तु इनका सर्वदा जुड़ा रहना आवश्यक नहीं है।

5. संज्ञाओं का रूपांतर किसे कहते हैं? उदाहरण के साथ लिखिए।

वाक्य में अर्थ के अनुसार शब्दों के रूप में परिवर्तन होता है। इसे रूपांतर कहते हैं।

लिंग, वचन और कारक आदि के द्वारा संज्ञाओं के रूप में जो परिवर्तन हो जाते हैं उन्हें संज्ञाओं के रूपांतर कहते हैं।

उदा -- लड़का आता है। लड़की आती है।

लड़का आता है। लड़के आते हैं।

लड़के को बुलाओ। लड़कों को बुलाओ।

6. लिंग से क्या समझा जाता है? हिन्दी में कितने लिंग हैं? समझाइए।

संज्ञा के जिस रूप से किसी वस्तु की पुरुष या स्त्री जाति जानी जाय उसे **लिंग** कहते हैं। दूसरे शब्दों में, लिंग संज्ञा का वह रूप है जिसके द्वारा कहे हुए शब्द की जाति पहचानी जाय। इससे मालूम हो जाता है कि अमुक शब्द पुरुष जाति के लिए आया है या स्त्री के लिए।

हिन्दी में दो ही लिंग हैं -- पुल्लिंग और स्त्रीलिंग।

जिस शब्द से किसी पुरुष या नर जाति का बोध हो उसे **पुल्लिंग** कहते हैं। जैसे -- लड़का, बेटा, भाई, बैल आदि। जिस शब्द से स्त्री या मादा जाति का बोध हो उसे **स्त्रीलिंग** कहते हैं। जैसे -- माता, लड़की, गाय, बेटी आदि।

7. संज्ञाओं के लिंग की पहचान कैसे की जाती है?

हिन्दी में लिंग-निर्णय शब्दों के अर्थ और रूप के आधार पर किया जाता है। पुरुषत्व और स्त्रीत्व का ज्ञान सजीवों में ही होता है, निर्जीवों में नहीं।

प्राणिवाचक शब्दों के लिंग की पहचान बहुत सरल है। जैसे -- आदमी, औरत, बालक, बालिका, राजा, रानी आदि।

अप्राणिवाचक शब्दों के लिंग की पहचान कठिन है। ऐसी संज्ञाओं के लिंग का ज्ञान साधारण बोल-चाल और कोश से होता है।

8. प्राणिवाचक संज्ञाओं के लिंग की पहचान कैसी होती है?

जो प्राणिवाचक संज्ञाएँ पुरुषवाचक हैं के पुल्लिंग होती हैं, जो स्त्रीवाचक हैं वे स्त्रीलिंग होती हैं। जैसे -- पिता(पु), माता (स्त्री), बैल (पु), गाय (स्त्री) आदि।

(क) कई प्राणिवाचक संज्ञाओं से दोनों जातियों -- नर और मादा - का बोध होता है, पर उनका प्रयोग एक नियत लिंग में ही होता है। जैसे -- उल्लू, कौआ, चीता, भेडिया -- ये पुल्लिंग में ही आते हैं। कोयल, चील, मैना, बिल्ली आदि केवल स्त्रीलिंग में आती हैं। जाति-भेद प्रकट करने के लिए इनके साथ नर या **मादा** शब्द लगाया जाता है। जैसे -- **नर कौआ, मादा कौआ, नर चीता, मादा चीता** आदि।

इसी तरह शिशु, कवि, छात्र, मेंबर, सभापति आदि शब्द भी पुल्लिंग में ही बोले जाते हैं। जाति-भेद प्रकट करने के लिए इन से पहले पुरुष या स्त्री शब्द जोड़ा जाता है। जैसे -- स्त्री मेंबर, स्त्री-कलेक्टर आदि।

(ख) प्राणियों के समुदायवाचक नाम व्यवहार के अनुसार पुल्लिंग और स्त्रीलिंग होते हैं। जैसे -- मंडल, दल, संघ, समूह, दम्पति आदि पुल्लिंग होते हैं। सेना, सभा, फौज़, टोली आदि स्त्रीलिंग होते हैं।

9. हिन्दी में अप्राणिवाचक शब्दों का लिंग-निर्णय किस प्रकार किया जाता है? उदाहरण के साथ लिखिए।

पुरुषत्व और स्त्रीत्व का ज्ञान सजीव यानी प्राणिवाचक में ही होता है, निर्जीवों में नहीं। निर्जीव या अप्राणिवाचक शब्दों के लिंग की पहचान कठिन है। ऐसी संज्ञाओं के लिंग का ज्ञान साधारण-बोलचाल और कोश से होता है। अप्राणिवाचक संज्ञाओं का लिंग-निर्णय रूप के अनुसार भी किया जाता है। कुछ नियम इस प्रकार हैं--

पुल्लिंग --- (1) आकारान्त 'आ' से अंत होनेवाले हिन्दी शब्द पुल्लिंग है। जैसै -- कपड़ा, पैसा, पहिया, आटा आदि।

(2) जिन भाववाचक संज्ञाओं के अंत में ना, आव, पन, पा होता है वे पुल्लिंग शब्द हैं। जैसे -- गाना, बहाव, लड़कपन, बुढ़ापा आदि।

(3) जिन शब्दों के अंत में 'त्र' होता है वे पुल्लिंग होते हैं। जैसे -- चित्र, पत्र, नेत्र, श्रेत्र, चरित्र आदि।

स्त्रीलिंग --- (1) आकारान्त संस्कृत शब्द स्त्रीलिंग हैं। जैसे -- दया, माया, कृपा, क्षमा, ममता आदि।

(2) ईकारान्त शब्द साधारणतः स्त्रीलिंग हैं। जैसे -- नदी, रोटी, टोपी, छड़ी, आदि। (अपवाद -- पानी, मोती, जी, दही, घी आदि)

(3) साधारण तौर से जिन हिन्दी शब्दों के अंत में 'त' होता है वे स्त्रीलिंग हैं। जैसे -- रात, बात, लात आदि। (अपवाद -- भात, भूत, सूत, गात, खेत, खत)। पर संस्कृत शब्द पुल्लिंग हैं। जैसे -- गणित, गीत, मत, स्वागत आदि।

(4) कुछ ऊकारान्त शब्द स्त्रीलिंग हैं। जैसे -- लू, बालू, आदि।

(5) जिन भाववाचक संज्ञाओं के अंत में ट, वट, हट होता है वे स्त्रीलिंग हैं। जैसे -- साजवट, बनावट, घबारहट, झंझट आदि।

इस प्रकार अप्राणिवाच शब्दों का लिंग जानने के नियम हिन्दी में हैं। लेकिन समस्त शब्दों का लिंग जानने के लिए ये नियम काफ़ी नहीं हैं। अतः अभ्यास के द्वारा ही शब्दों का लिंग जान सकते हैं।

10. किन-किन वस्तुओं के नाम पुल्लिंग माने जाते हैं?

नीचे लिखे शब्द **पुल्लिंग** हैं --

1. कुछ 'आकारांत' शब्द। जैसे -- छाता, सोटा, लोटा, घड़ा, जाड़ा, पहिया, आटा आदि।

2. कुछ 'ईकारांत' शब्द जिनसे किसी जाति या व्यवसाय का बोध हो। जैसे -- माली, धोबी, दर्जी, सिपाही आदि।

3. दिनों और महीनों के नाम। जैसे -- सोमवार, शुक्रवार, चैत्र, वैशाख, जेठ आदि।

4. ग्रह, धातु और रत्नों के नाम। जैसे -- सूर्य, चंद्र, मंगल आदि। सोना, ताँबा, सीसा, पीतल आदि। हीरा, पन्ना, मोती, माणिक आदि। पर पृथ्वी, चाँदी, मिट्टी तथा धातु (धात) स्त्रीलिंग हैं।

5. पहाड़ों के नाम -- हिमालय, विंध्याचल, नीलगिरि आदि।

6. समुद्रों के नाम -- हिनद महासागर, अरब सागर आदि।

7. देशों के नाम -- हिन्दुस्तान, अमेरिका आदि।

8. जिलों के नाम -- इलाहाबाद, आगरा, मैनपुरी आदि।

9. शहरों और गाँवों के नाम -- इलाहाबाद, कानपुर, मद्रास आदि। (काशी, मथुरा, अयोध्या, काँची, अवंतिका, द्वारका, मायापुरी स्त्रीलिंग हैं।)

10. पेड़ों के नाम -- पीपल, देवदार, आम, बरगद, नीम, शीशम आदि। अपवाद -- इमली स्त्रीलिंग है।

11. अनाजों के नाम -- चावल, गेहूँ, बाजरा, चना, मटर, जौ आदि। अपवाद -- अरहर, मूँग, मकई, जुआर आदि।

12. द्रव पदार्थों के नाम -- पानी, तेल, घी, शर्बत आदि। अपवाद -- छाछ (मट्ठा) स्त्रीलिंग हैं। (छाछ का अर्थ मट्ठा है। पर 'छाछ' शब्द स्त्रीलिंग है और 'मट्ठा' शब्द पुल्लिंग है।)

11. किन-किन वस्तुओं के नाम स्त्रीलिंग माने जाते हैं?

नीचे लिखे शब्द स्त्रीलिंग हैं--

1. अधिकतर ईकारांत शब्द स्त्रीलिंग होते हैं। जैसे -- चौकी, टोपी, कुर्सी, रोटी आदि।

2. कुछ शुद्ध संस्कृत शब्द जिनके अंत में 'आ' हो, स्त्रीलिंग होते हैं। जैसे -- लता, वार्ता, दया, क्षमा, माला, कृपा, अभिलाषा आदि।

3. कुछ इकारांत शब्द स्त्रीलिंग हैं, जैसे -- शक्ति, भक्ति, मुक्ति, अग्नि, विधि, राशि, गति, मति, बुद्धि आदि।

4. नदियों के नाम -- गंगा, यमुना, नर्मदा, कावेरी आदि।

अपवाद -- सिंधु, ब्रह्मपुत्रा, सोन -- पुल्लिंग हैं।

5. तिथियों के नाम -- प्रतिपदा (पड़वा), द्वितीय (दूज), तृतीया (तीज) आदि।

6. नक्षत्रों के नाम जैसे -- अश्विनी, भरणी, कृत्तिका, रोहिणी आदि।

7. भाषाओं के नाम जैसे -- हिन्दी, संस्कृत, तमिल आदि।

8. जिन भाववाचक शब्दों के अंत में न्त, ता, आई, वट, हट हों, जैसे -- गढन्त, मनुष्यता, सिलाई, रुलाई, सजावट, घबराहट आदि।

9. वर्णमाला के अक्षर -- इ, ई और ऋ स्त्रीलिंग हैं।

10. ऊनवाचक (छोटे का बोध करानेवाला) शब्द स्त्रीलिंग होते हैं। जैसे -- खटिया, डिबिया, चुटिया, डलिया, बिलिया आदि।

12. किसी शब्द का लिंग किन उपायों से पहचाना जा सकता है?

शब्द का लिंग पाँच उपायों से पहचाना जा सकता है--

1. आ, ए, ई नियम से -- अधिकतर आकारांत और एकारांत शब्द पुल्लिंग होते हैं और ईकारांत स्त्रीलिंग होते हैं। जैसे लड़का, लड़की। कुछ हद तक इससे शब्द के लिंग की पहचान हो सकती है।

2. विशेषण के रूप से -- विशेषणों का लिंग और वचन विशेष्य संज्ञाओं के लिंग और वचन के अनुरूप होता है। जैसे --

लड़का -- अच्छा लड़का -- पुल्लिंग एकवचन

लड़के -- अच्छे लड़के -- पुल्लिंग बहुवचन

लड़की -- अच्छी लड़की -- स्त्रीलिंग एक वचन

3. क्रिया के रूप से -- वाक्य में क्रिया का लिंग और वचन कर्ता के लिंग और वचन के अनुरूप होता है, जैसे --

लड़का -- आता है, लड़के -- आते हैं, लड़की -- आती है।

4. 'का, के, की' के प्रयोग से --

संबंधकारक में आगामी संज्ञा के लिंग और वचन के अनुरूप ही का, के, की का प्रयोग होता है। जैसे--

राम का घर, राम के घर, राम की किताब।

5. संज्ञाओं के बहुवचन रूप से

	एकवचन		बहुवचन
पुल्लिंग शब्द	नगर में	--	नगरों में
	लड़का	--	लड़के
स्त्रीलिंग शब्द	आँख	--	आँखें
	माला	--	मालाएँ आदि।

13. कुछ ऐसे शब्द लिखिए जिनका संस्कृत में एक लिंग होता है और हिन्दी में और?

वे शब्द, जिनका संस्कृत में एक लिंग होता है और हिन्दी में और, इस प्रकार हैं--

अग्नि, आत्मा, ऋतु, देह, बाहु, राशि, वस्तु, वायु, विजय, विधि, संतान आदि शब्द संस्कृत में पुल्लिंग हैं पर हिन्दी में स्त्रीलिंग हैं। देवता, व्यक्ति --- संस्कृत में स्त्रीलिंग हैं पर हिन्दी में पुल्लिंग हैं।

14. पुल्लिंग से स्त्रीलिंग बनाने के कुछ नियम लिखिए?

हिन्दी में पुल्लिंग से स्त्रीलिंग बनाने के लिए ई, इया, इन, नी, आनी, आइन -- ये ही प्रत्यय इस्तेमाल किये जाते हैं। विवरण इस प्रकार है--

1. 'ई' (1) अकारान्त शब्दों में अंतिम 'अ' को 'ई' बनाने से स्त्रीलिंग शब्द बनता है। जैसे --

पुत्र	--	पुत्री	नट	--	नटी
रोटी	--	रोटी	देव	--	देवी
दास	--	दासी	बंदर	--	बंदरी
मेंढक	--	मेंढ़की	तीतर	--	तीतरी
हिरन	--	हिरनी	आदि।		

'ई' (2) आकारान्त शब्दों के अंतिम 'आ' का 'ई' बनाने से स्त्रीलिंग बनता है। जैसे---

बेटा	--	बेटी	घोड़ा	--	घोड़ी
लड़का	--	लड़की	नान	--	नानी
दादा	--	दादी	भतीजा	--	भतीजी
बकरा	--	दादी	रस्सा	--	रस्सी
आदि।					

2. 'इया' -- कुछ आकारांत शब्दों में 'आ' के बदले में 'इया' लगा देते हैं। निरादर या प्रेम में 'ई' के बदले 'इया' आता है। जैसे --

बेटा	--	बेटिया	बूढ़ा	--	बुढ़िया
कुत्ता	--	कुतिया	चूहा	--	चुहिया
लोटा	--	लुटिया	गधा	--	गधैया
बंदर	--	बंदरिया	आदि।		

3. 'इन' -- कुछ व्यवसायवाचक पुल्लिंग शब्दों के अंतिम स्वर के बदले में 'इन' प्रत्यय लगाने से स्त्रीलिंग बनता है। जैसे --

कहार	--	कहारिन	खिलाड़ी	--	खिलाड़िन
जुलाहा	--	जुलाहिन	तेली	--	तेलिन
धोबी	--	धोबिन	नाती	--	नातिन
लोहार	--	लोहारिन	माली	--	मालिन

4. 'नी' -- कुछ अकारांत शब्दों के अंत में 'नी' जोड़ने से स्त्रीलिंग बनता है। जैसे --

ऊँट	--	ऊँटनी	जाट	--	जाटनी
बाघ	--	बाघनी (बाघिन)	मोर	--	मोरनी
राजपूत	--	राजपूतनी	शेर	--	शेरनी
सिंह	--	सिंहनी	सियार	--	सियारनी
हाथी	--	हथिनी	हिन्दू	--	हिन्दुनी

5. 'आनी' -- कुछ अकारान्त शब्दों के अंत में 'आनी' लगाने से स्त्रीलिंग बनता है। जैसे --

देवर	--	देवरानी	नौकर	--	नौकरानी
पंडित	--	पंडितानी	मुगल	--	मुगलानी
मेहतर	--	मेहतरानी	सेठ	--	सेठानी
इन्द्र	--	इन्द्राणी			

अकारान्त से भिन्न शब्दों में भी कहीं कहीं 'आनी' प्रत्यय लगता है।

जैसे --

क्षत्री	--	क्षत्राणी	खत्री	--	खत्रानी
चौधरी	--	चौधरानी			

6. 'आइन' -- उपनामवाचक और पदवीवाचक पुल्लिंग शब्दों के अंतिम स्वर का लोप करके 'आइन' लगा देते हैं। अगर इनका पहला स्वर दीर्घ हो तो ह्रस्व हो जाता है। जैसे --

ओझा	--	ओझाइन	चौबे	--	चौबाइन
ठाकुर	--	ठकुराइन	दुबे	--	दुबाइन
पांडे	--	पांडाइन	बनिया	--	बनियाइन
बाबू	--	बबुआइन	मिसिर	--	मिसिराइन
लाला	--	ललाइन	सुकुल	--	सुकुलाइन

आदि।

7. संस्कृत में आये पुल्लिंग शब्दों के साथ प्रायः संस्कृत के स्त्री प्रत्यय (आ या ई) लगाये जाते हैं। जैसे --

सुत	--	सुता	बालक	--	बालिका
विशारद	--	विशारदा	चतुर	--	चतुरा
स्वामी	--	स्वामिनी			

8. कई पुल्लिंग शब्दों के स्त्रीलिंग शब्द बिलकुल अलग होते है।

जैसे --

आदमी	--	औरत	पिता	--	माता
कवि	--	कवयित्री	पुरुष	--	स्त्री
नर	--	मादा	बहनोई	--	बहन
पुत्र	--	कन्या	बैल	--	गाय
प्रिय	--	प्रिया	भाई	--	बहन, भौजाई
बाप	--	माँ	मियाँ	--	बीबी
भव	--	भवानी	राँड	--	रँडुवा
मर्द	--	औरत	वर	--	वधू
युवा	--	युवती	विधुर	--	विधवा
राजा	--	रानी	सभापति	--	सभानेत्री
विद्वान	--	विदुषी	साहब	--	मेम
श्रीमान्	--	श्रीमती	ससुर	--	सास

आदि।

15. स्त्रीलिंग से पुल्लिंग बनाने के कुछ नियम बताइए।

स्त्रीलिंग से पुल्लिंग बनाने के कुछ नियम इस प्रकार हैं--- जैसे पुरुषवाचक शब्दों के अंत में प्रत्यय लगाने से वे स्त्रीवाचक हो जाते हैं, वैसे ही स्त्रीवाचक शब्दों के अंत में कुछ प्रत्यय लगाने से वे पुरुषवाचक बन जाते हैं।

1. कुछ स्त्रीलिंग शब्दों में 'आई', 'आव', 'औटा' लगाने से, जैसे ---

ननद	--	ननदोई	बहन	--	बहनोई
बिल्ली	--	बिलाव	सिल	--	सिलौटा

2. कुछ 'ईकारान्त' शब्दों की अंतिम 'ई' को 'आ' में बदलने से, जैसे --

अधन्नी	--	अधन्ना	झोली	--	झोला
बेटी	--	बेटा	लड़की	--	लड़का
रस्सी	--	रस्सा			

3. कई 'ईकारान्त' शब्दों की अंतिम 'ई' को 'अ' में बदलने से, जैसे --

गठड़ी	--	गट्ठड़	रोटी	--	रोट

4. कई स्त्रीलिंग शब्दों के अन्त में 'आ' लगा देने से, जैसे --

भेड़	--	भेड़ा	भैंस	--	भैंसा

राँड -- रंडुआ

5. कई स्त्रीलिंग शब्द अर्थ की दृष्टि से स्त्रियों के लिए ही आते हैं। उनका पुल्लिंग रूप नहीं होता। जैसे -- गर्भवती, गाभिन (गर्भिणी), धाय, वेश्या, सती, सुहागिन, सौत आदि।

16. वचन किसे कहते हैं? हिन्दी में कितने वचन हैं? उदाहरण के साथ समझाइए।

संज्ञा आदि विकारी शब्दों के जिस रूप से वस्तु की संख्या (एक या एक से अधिक) का बोध होता है उसे **वचन** कहते हैं।

हिन्दी मे दो ही वचन हैं -- एकवचन और बहुवचन।

एकवचन -- जिस शब्द से **एक ही वस्तु का बोध** होता है, उसे एकवचन कहते हैं। जैसे -- कपड़ा, किताब, पेटी, लड़की, रुपया आदि।

बहुवचन -- जिस शब्द से एक से अधिक वस्तुओं का बोध होता है उसे बहुवचन कहते हैं। जैसे -- कपड़े, किताबें, पेटियाँ, लड़कियाँ, रुपये आदि।

17. एक वचन और बहुवचन संबंधी विशेष नियम क्या हैं?

एकवचन और बहुवचन संबंधी कुछ विशेष नियम इस प्रकार हैं---

1. जिस शब्द से एक वस्तु का बोध होता है, उसे एकवचन कहते हैं। जैसे -- गाय, लड़का आदि।
2. जिस शब्द से एक से अधिक वस्तुओं का बोध होता है, उसे बहुवचन कहते हैं। जैसे गायें, लड़के आदि।
3. केवल 'जातिवाचक' संज्ञाओं में ही दोनों वचन होते हैं, व्यक्तिवाचक और भाववाचक में नहीं। **अगर व्यक्तिवाचक और भाववाचक संज्ञाऐं बहुवचन में प्रयुक्त हों तो वे भई जातिवाचक ही मानी जाती हैं।** जैसे -- इस दर्जे में कई गाँधीजी हैं। बड़ी-बड़ी ताकतें आदि।
4. शिष्टाचार के भाव में एकवचन का प्रयोग भी बहुवचन की तरह होता है। जैसे -- गाँधीजी एक महान पुरुष थे। यहाँ 'थे' क्रिया बहुवचन की है। पर शिष्टाचार में एकवचन में ही प्रयुक्त हुई है।
5. कभी-कभी एकवचन से भी बहुवचन का अर्थ होता है। जैसे -- उसके पास बहुत पैसा है या रुपया है।

6. विशेष -- प्राण, दर्शन, लोग आदि शब्द केवल बहुवचन में ही प्रयुक्त होते हैं। जैसे -- उसके प्राण निकल गये। भगवान के दर्शन हुए। आप लोग बैठिए आदि।

7. जनता, तैयारी, सामग्री आदि शब्द प्रायः एकवचन में ही प्रयुक्त होते हैं।

17. एकवचन से बहुवचन बनाने के कुछ नियम लिखिए।

एकवचन से बहुवचन बनाने के नियमों को दो भागों में बाँट सकते हैं।

1. पुल्लिंग शब्दों के बहुवचन बनाने के नियम और
2. स्त्रीलिंग शब्दों के बहुवचन बनाने के नियम।

1. <u>पुल्लिंग शब्दों के बहुवचन बनाने के नियम इस प्रकार हैं---</u>

संज्ञा शब्दों में वचन के अनुसार जो विकार होता है वह दो प्रकार का है-- विभक्ति के बिना और विभक्ति के साथ।

<u>विभक्ति के बिना संज्ञाओं के बहुवचन--</u>

(क) आकारांत पुल्लिंग शब्दों का बहुवचन बनाने के लिए अंतिम 'आ' को 'ए' कर दिया जाता है। जैसे-

लड़का	--	लड़के	भानजा	--	भानजे
घोड़ा	--	घोड़े	पोता	--	पोते
कपड़ा	--	कपड़े	लोटा	--	लोटे
पहिया	--	पहिये	सोटा	--	सोटे आदि

अपवाद -- बाबा, दादा, मामा, नाना, चाचा, काका, देवता, योद्धा, सूरमा आदि शब्दों का रूप दोनों वचनों में एक ही रहता है।

(ख) आकारांत पुल्लिंग शब्दों को छोड़कर अन्य पुल्लिंग शब्द दोनों वचनों में एक ही प्रकार रहते हैं। जैसे--

घर	--	घर	मुनि	--	मुनि
भाई	--	भाई	साधु	--	साधु

डाकू -- डाकू आदि।

विभक्ति के साथ संज्ञाओं के बहुवचन

एकवचन		**बहुवचन**
बेटा	--	बेटोंने, बेटों को, बेटों से, बेटों में आदि।
आदमी	--	आदमियों ने, आदमियों को, आदमियों से, आदमियों में आदि।
राजा	--	राजाओं ने, राजाओं को, राजाओं से आदि।

(ग) बहुत्व प्रकट करने के लिए संज्ञा के एकवचन के साथ गण, वृन्द, लोग, जन, वर्ग आदि शब्द भी जोड़े जाते हैं। जैसे -- पाठक गण, सज्जन वृन्द, बाबू लोग आदि।

2. स्त्रीलिंग शब्दों के बहुवचन बनाने के नियम---

(क) विभक्ति रहित बहुवचन रूप

1. अकारांत स्त्रीलिंग शब्दों का बहुवचन बनाने के लिए अंतिम 'अ' स्वर को 'एँ' में बदलते हैं। जैसे-

बहन -- बहनें बात -- बातें

आँख -- आँखें रात -- रातें

किताब -- किताबें तस्वीर -- तस्वीरें आदि।

2. 'इकारांत' शब्द के अंतिम स्वर के बाद 'याँ' जोड़ते हैं, जैसे--

तिथि -- तिथियाँ नीति -- नीतियाँ

रीति -- रीतियाँ आदि।

3. 'ईकारांत' स्त्रीलिंग संज्ञाओं में अंतिम 'ई' को ह्रस्व करके अंतिम स्वर के बाद 'याँ' जोडते हैं। जैसे--

टोपी -- टोपियाँ रानी -- रानियाँ

लड़की -- लड़कियाँ सखी -- सखियाँ

स्त्री -- स्त्रियाँ आदि।

4. 'याकारान्त' स्त्रीलिंग शब्दों का बहुवचन बनाने के लिए केवल चन्द्रविन्दु लगाया जाता है। जैसे--

चिड़िया -- चिड़ियाँ टिकिया -- टिकियाँ

डिबिया -- डिबियाँ बुढ़िया -- बुढ़ियाँ आदि।

5. अ, इ, ई याकारांत स्त्रीलिंग शब्दों को छोड़कर अन्य स्त्रीलिंग शब्दों का बहुवचन बनाने के लिए 'एँ' या 'यें' लगाते हैं। जैसे---

माता -- माताएँ दवा -- दवाएँ

लता -- लताएँ माला -- मालाएँ

वस्तु -- वस्तुएँ बहू -- बहुएँ

(उ, को ह्रस्व करना चाहिए।)

(ख) <u>विभक्ति के साथ बहुवचन रूप--</u>

एकवचन	बहुवचन
लड़की --	लड़कियों ने, लड़कियों को, लड़कियों में आदि।
टोपी --	टोपियों को, टोपियों के लिए, टोपियों में आदि।

<u>विशेष</u> -- 1. प्राण, दर्शन, लोग, होश आदि शब्द प्रायः बहुवचन में ही बोले जाते हैं।

2. सामग्री, तायारी आदि एकवचन में ही प्रयुक्त होते हैं।

18. कारक किसे कहते हैं? विभक्ति किसे कहते हैं?

संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसका संबंध वाक्य में दूसरे शब्दों के साथ जाना जाता है, उसको **कारक** कहते हैं। जैसे--

''राम राजू को उसकी किताब दे रहा है।''

इक वाक्य में 'राम', 'राजू को', 'किताब' ये सब संज्ञाओं के रूपांतर हैं और 'उसकी' सर्वनाम 'वह' का रूपांतर है। इन रूपांतरों द्वारा इन संज्ञाओं का परस्पर और 'दे रहा है' -- इस क्रिया के साथ संबंध प्रकट होता है। इसलिए ये कारक हैं।

कारक को प्रकट करने के लिए संज्ञा या सर्वनाम के साथ 'को', 'की', 'ने' आदि जो कारक चिन्ह जोड़े जाते हैं उनको **विभक्ति** कहते हैं।

19. हिन्दी में कितने कारक हैं? उनके नाम कारक चिन्हों के साथ लिखिए।

हिन्दी में आठ कारक हैं। वे इस प्रकार हैं---

	कारक नाम	कारक चिन्ह (विभक्ति)
1.	कर्ताकारक	'ने' (केवल भूतकाल में)
2.	कर्मकारक	को
3.	करणकारण	से, के द्वारा (सहायता के अर्थ में)
4.	संप्रदानकारक	को, केलिए (के वास्ते)
5.	अपादानकारक	से (संबंध विच्छेद)
6.	संबंधकारक	का, के, की
7.	अधिकरणकारक	में, पर
8.	संबोधनकारक	हे, अरे, अहो, अजी आदि।

20. हिन्दी के आठ कारकों को उदाहरणों के साथ समझाइए।

1. **कर्ता कारक** -- वाक्य में क्रिया के करने दाले को कर्ता कहते हैं। यानी संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से कर्ता या करनेवाले का बोध होता है उसे **कर्ता कारक** कहते हैं। जैसे -- राम ने किताब पढ़ी है। इसमें 'राम ने' कर्ता कारक है।
2. **कर्म कारक** -- जिस वस्तु पर क्रिया के व्यापार का फल पड़ता है, उसे सूचित करनेवाले संज्ञा के रूप को **कर्म कारक** कहते हैं। इसकी विभक्ति 'को' है। जैसे --- पिताजी ने राजू को बुलाया। इसमें 'राजू को' कर्म कारक है।
3. **करण कारक** -- क्रिया के साधन का बोध करानेवाले संज्ञा के रूप को करण कारक कहते हैं। इसकी विभक्ति 'से' है। जैसे--- रवि कलम से लिखता है। इसमें 'कलम से' करण कारक है। क्योंकि लिखने की क्रिया कलम से होती है। (भूख से व्याकुल, रोग से पीड़ित, गुणों से पूज्य, राम

से रावण मारा गया, सुख से, कृपया, मनसा, वाचा, कर्मना (मन वचन और कर्म से आदि करण कारक हैं।)

4. **संप्रदान कारक** --- जिसे कुछ दिया जाय, या जिसके लिए कुछ किया जाय, उसे सूचित करनेवाले संज्ञा के रूप को संप्रदान कारक कहते हैं। इसकी विभक्ति 'को' है। जैसे-- रवि नहाने को गया है।
5. **अपादान कारक** --- संज्ञा के जिस रूप से अलगाव या विभाग का बोध होता है, उस रूप को अपादान कारक कहते हैं। इसकी विभक्ति 'से' है। जैसे -- वह फल पेड़ से गिर पड़ा।
6. **संबंध कारक** --- संज्ञा के जिस रूप से एक का संबंध दूसरे के साथ मालूम हो उस रूप को संबंध कारक कहते हैं। इस कारक की विभक्ति 'का' है। यह बहुवचन में 'के' और स्त्रीलिंग के लिए 'की' में बदल जाता है। जैसे -- राम का बेटा, राम के बेटे, राम की बेटी।
7. **अधिकरण कारक** -- संज्ञा के जिस रूप से क्रिया के आधार का बोध होता है, उस रूप को अधिकरण काकर कहते हैं। इसकी विभक्तियाँ 'में' और 'पर' हैं। जैसे -- घर में कौन है? पेड़ पर बंधर है।
8. **संबोधन कारक** -- संज्ञा के जिस रूप से किसी को चिताना (चेतावनी देना), पुकारना आदि सूचित हो उस रूप को संबोधन कारक कहते हैं। अरे, ओ, ए, हे आदि इसकी विभक्तियाँ हैं। जैसे -- अरे छोकरे, ऐ लड़के, हे प्रभो आदि।

21. कर्म कारक और संप्रदान कारक में क्या अंतर है? उदाहरण के साथ समझाइए।

कर्म कारक और संप्रदान कारक दोनों का ही चिन्ह 'को' है। जिस वस्तु पर क्रिया के व्यापार का फल पड़ता है उसे सूचित करनेवाले संज्ञा के रूप को कर्म कारक कहते हैं। (उदा... रामने रावण को मारा। रामने लड़के को बुलाया।)

लेकिन जिस वस्तु के लिए कोई क्रिया की जाती है, या जिस विभक्ति से 'के वास्ते' आदि अर्थ का बोध होता है उसे संप्रदान कारक कहते हैं। उदा... लड़का नहाने को गया।

22. करण कारक और अपादान कारक में क्या अंतर है? उदाहरण के साथ समझाइए।

करण कारक और अपादान कारक दोनों का ही चिन्ह 'से' है। करण कारक संज्ञा के उस रूप को कहते हैं जिससे क्रिया के साधन का बोध होता है। जैसे -- हम आँखों से देखते हैं। लेकिन अपादान कारक

संज्ञा के उस रूप को कहते हैं जिससे अलगाव या क्रिया के विभाग की अवधि सूचित होती है। जैसे गंगा हिमालय से निकलती है। राजू कल से बीमार है।

23. सर्वनाम किसे कहते हैं? उसके कितने भेद हैं? उनके नाम उदाहरण के साथ लिखिए।

संज्ञा के बदले जिस शब्द का प्रयोग किया जाता है, उसे सर्वनाम कहते हैं। सर्वनाम के छः भेद हैं। वे इस प्रकार हैं---

	नाम	**उदाहरण**
1.	पुरुषवाचक सर्वनाम	मैं, तुम, हम, आप, वह, वे, यह, ये।
2.	निजवाचक सर्वनाम	आप
3.	निश्चयवाचक सर्वनाम	यह, ये, वह, वे
4.	अनिश्चयवाचक	सर्वनाम कोई, कुछ
5.	प्रश्नवाचक सर्वनाम	कौन, क्या
6.	संबंधवाचक सर्वनाम	जो - सो, जो - वह

24. सर्वनाम के भेदों को उदाहरण के साथ समझाइए।

सर्वनाम के छे भेद हैं। वे इस प्रकार हैं--

1. पुरुषवाचक सर्वनाम
2. निजवाचक सर्वनाम
3. निश्चयवाचक सर्वनाम
4. अनिश्चयवाचक सर्वनाम
5. प्रश्नवाचक सर्वनाम
6. संबंधवाचक सर्वनाम

1. **पुरुषवाचक सर्वनाम** -- जिनके विषय में कुछ कहा जाय या उनका बोध कराते हैं उन्हें पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे -- मैं, हम, तुम, वह आदि।
2. **निजवाचक सर्वनाम** -- जो सर्वनाम अपनी ओर संकेत करे उसे निजवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे -- आप।
3. **निश्चयवाचक सर्वनाम** -- जो सर्वनाम पास या दूर की वस्तु का निश्चय करायें उनको निश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं। यह, ये, वह, वे -- ये चारों निश्चयवाचक सर्वनाम हैं।

4. **अनिश्चयवाचक सर्वनाम** -- जिस सर्वनाम से किसी विशेष वस्तु का बोध न हो, उसे अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं। अनिश्चयवाचक सर्वनाम दो ही हैं -- कोई और कुछ।

5. **प्रश्नवाचक सर्वनाम** -- जिस सर्वनाम से प्रश्न का बोध हो उसे प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे -- कौन, क्या।

6. **संबंधवाचक सर्वनाम** -- जो सर्वनाम एक बात का दूसरी बात से संबंध प्रकट करते हैं, उनको संबंधवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे -- 'जो-सो'। 'सो' हमेशा 'जो' के साथ आता है। 'सो' के बदले 'वह' का भी प्रयोग होता है।

25. सर्वनाम शब्दों की क्या उपयोगिता है?

संज्ञाओं के बदले अगर सर्वनाम शब्दों का प्रयोग न हो, तो संज्ञा शब्दों के बार-बार आने से वाक्य में एक प्रकार का भद्दापन आ जायगा और वाक्य बढ़ भी जाएगा। जैसे -- 'रामचन्द्र यहाँ आया और वह अपनी किताब ले गया' कहने के बदले अगर यों कहें -- 'रामचन्द्र यहाँ आया और रामचन्द्र की किताब ले गया' तो बहुत ही भद्दा लगेगा। दूसरे, वाक्य के अर्थ में भी गड़बडी हो सकती है।

26. पुरुषवाचक सर्वनामों के भेदों को समझाइए।

पुरुषवाचक सर्वनाम -- वह सर्वनाम है जो बात के कहनेवाले, सुननेवाले और संबद्ध पुरुष के लिए प्रयोग में लाया जाता है। जैसे -- मैं, तुम, वह। पुरुषवाचक सर्वनाम के तीन भेद हैं---

1. उत्तम पुरुष, 2. मध्यम पुरुष और 3. अन्य पुरुष।

1. **उत्तम पुरुष** -- यह वह सर्वनाम है जो बातचीत करनेवाले के लिए प्रयोग में लाया जाता है। जैसे में और हम। (मैं, मुझे, मेरा, मेरे, मेरी आदि एकवचन में और हम, हमें, हमारा, हमारे, हमारी आदि बहुवचन में आते हैं।)

2. **मध्यम पुरुष** -- जिससे बातचीत की जाती है उसके लिए प्रयुक्त सर्वनाम मध्यम पुरुष सर्वनाम है। जैसे -- तू, तुम और आप। (तू, तुझे, तेरा, तेरे, तेरी आदि का प्रयोग एकवचन में और तुम, तुम्हें तुम्हारा, तुम्हारे, आप, आपको, आपका आदि बहुवचन में होता है।)

3. **अन्य पुरुष** -- जिसके विषय में कुछ कहा जाय उसके लिए प्रयुक्त होनेवाले सर्वनाम को अन्य पुरुष सर्वनाम कहते हैं। जैसे -- वह, यह, वे, ये, वह, उसको, उसका, उसके, उसकी आदि का प्रयोग एकवचन में होता है और वे, उनको, उनका, उनके आदि बहुवचन में।

27. सर्वनाम का प्रयोग विशेषण के रूप में करने के कुछ उदाहरण दीजिए।

कौन -- यहाँ कौन आता है? (सर्वनाम)

यहाँ कौन आदमी आता है? (विशेषण)

जो -- जो जागता है वह पाता है। (सर्वनाम)

जो आदमी जागता है वह पाता है। (विशेषण)

यह -- यह अच्छी तस्वीर है। (सर्वनाम)

यह तस्वीर अच्छी है। (विशेषण)

28. विशेषण किसे कहते हैं? उसके कितने भेद हैं? उदाहरण के साथ समझाइए।

जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताता है, उसे विशेषण कहते हैं।

विशेषण के चार मुख्य भेद हैं। वे इस प्रकार हैं---

1. **गुणवाचक विशेषण** -- जिस विशेषण से किसी संज्ञा या सर्वनाम में गुण, रंग, आकार, समय आदि की विशेषता पायी जाती है उसे गुणवाचक विशेषण कहते हैं। जैसे -- अच्छा, मोटा, काला, नया पतला आदि।
2. **संख्यावाचक विशेषण** -- जिस विशेषण से किसी संज्ञा या सर्वनाम की संख्या, क्रम, समूह आदि का बोध होता है उसे संख्यावाचक विशेषण कहते हैं। जैसे -- एक, चार, पहला, सातों, चौगुना आदि।
3. **परिमाणवाचक विशेषण** -- जिस विशेषण से किसी वस्तु के माप -- तौल या परिमाण का पता चलता है उसे परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं। जैसे -- थोड़ा, बहुत, कम अधिक, दो सेर, एक किलो घी आदि।
4. **सार्वनामिक या निर्देशक विशेषण** -- जब सर्वनाम शब्द किसी संज्ञा के पहले विशेषण की तरह आते हैं तब उनको सार्वनामिक विशेषण कहते हैं। जैसे -- वह आदमी कौन है। यह मकान बड़ा है आदि।

29. गुणवाचक विशेषण किसे कहते हैं? उसके भेदों को उदाहरण के साथ लिखिए।

जिस विशेषण से किसी संज्ञा या सर्वनाम में गुण, रंग, आकार आदि की विशेषता पायी जाती है, उसे गुणवाचक विशेषण कहते हैं। जैसे --

गुण -- अचछा, बुरा, साधु धर्मात्मा, पापी आदि।

रंग -- काला, पीला, हरा, लाल, सफ़ेद आदि।

आकार -- गोल, चौकोर, समतल, चपटी, सुडोल, नुकीली आदि।

समय या काल -- नया, पुराना, भूत, वर्तमान, भविष्यत् आदि।

दशा -- पतला, दुबला, मोटा, गाढ़ा, गीला, सूखा, स्वस्थ, रोगी, अमीर, गरीब आदि।

स्थान -- बाहरी, भीतरी, ऊँचा, नीचा आदि।

दिशा -- दक्षिणी, उत्तरी, पूर्वी, पश्चिमी, दायाँ, बायाँ आदि।

देश -- हिन्दुस्तानी, रूसी, जापानी, अमरीकी, चीनी आदि।

30. संख्यावाचक विशेषण किसे कहते हैं? उसके कितने भेद हैं? उदाहरण के साथ लिखिए।

जिन विशेषणों से किसी संज्ञा या सर्वनाम की गणना (संख्या), क्रम, गुणा (गुना) आदि का बोध होता है, उनको संख्यावाचक विशेषण कहते हैं।

संख्यावाचक विशेषणों के दो मुख्य भेद हैं--- 1. निश्चित संख्यावाचक विशेषण और 2. अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण।

निश्चित संख्यावाचक विशेषण -- इनसे निश्चित संख्या का बोध होता है। जैसे -- चार, आठवाँ, दसगुना, पाँचों आदि।

निश्चित संख्यावाचक के पाँच भेद हैं। वे इस प्रकार हैं--

1. **गणनावाचक** --इनसे गणना की जाती है। जैसे -- एक, दो, चार, आठ आदि।

2. **क्रमवाचक** --इनसे संख्या का क्रम प्रकट होता है। जैसे -- पहला, दूसरा, दसवाँ, बीसवाँ, सौवाँ आदि।

3. **आवृत्तिवाचक** --इनसे यह मालूम होता है कि विशेष्य के गुणा है। जैसे -- दुगुना, चौगुना, दस गुना आदि।

4. **समुदायवाचक** --इनसे किसी संज्ञा का समुदाय मालूम होता है। जैसे -- चारों वेद, पाँचों पांडव, सातों दिन, नवों ग्रह, दसों अवतार, सत्ताईसों नक्षत्र आदि।

5. **प्रत्येकबोधक या विभागवाचक** --- इनसे प्रत्येक वस्तु का बोध होता है। जैसे -- हर एक लड़का, प्रत्येक आदमी। एक-एक, दो-दो, तीन-तीन आदि से भी प्रत्येकबोधक संख्यावाचक विशेषण होता है। अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण -- इनसे निश्चित संख्या का बोध नहीं होता। जैसे --- कई, बहुत--से, कुछ, थोड़े आदि।

3. Comprehension अर्थग्रहण

गुरु नानक का प्रादुर्भाव पन्द्रहवीं शताब्दी में उस समय हुआ जब हिन्दू धर्म कर्मकाण्ड की जटिलताओं में जकड़ा हुआ था और अंधविश्वासों का बोलबाला था। मुसलमान भी असहिष्णुता के शिकार थे। ऐसी विषम परिस्थिति में मानवता के उद्धार के लिए गुरु नानकदेव भारत भूमि पर अवतरित हुए। इस महान संत ने भारतीय समाज को भाई-बन्धुत्व और राष्ट्रीय एकता की ज्योति से आलोकित किया। गुरु नानक का कहना था कि किसी व्यक्ति के धर्म की कसौटी उसका आचरण है। ईश्वर वहीं वास करता है, जहाँ सत्य, प्रेम और निर्मलता है। वे जीवन की सम्पूर्णता में विश्वास करते थे। उन्होंने सर्वांगीण मानवता की कल्पना की थी।

गुरु नानकदेव जी नयी चेतना के अग्रदूत थे। उनकी वाणी और उसमें निहित संदेश न केवल भारत वरन् देश की सीमाओं के बाहर भी पूरे मनोयोग से सुना गया। गुरु नानक ने पूरे देश का भ्रमण तो किया ही था, तिब्बत, अरब, मक्का, मदीना, श्रीलंका और अफगानिस्तान की यात्रा भी की थी। वे नये जीवन और मानव-मूल्यों का संचार करना चाहते थे।

गुरु नानकदेव जी मात्र एक धर्मप्रवर्तक ही नहीं थे, वरन् एक जगद्गुरु, महान् दार्शनिक और सबसे बढ़कर समाज-सुधारक थे। उनके जन्म के साय भारतीय समाज पतनोन्मुख अवस्था में था। उस समय की राजनीतिक स्थिति और भी दयनीय अवस्था में थी।

अभ्यास के प्रश्नों का नमूना:

1. (क) गुरु नानकदेव के जन्म के समय भारत की धार्मिक स्थिति कैसी थी?

   (ख) गुरु नानक ने मानवता के उद्धार के लिए क्या किया?

   (ग) उन्होंने धर्म की क्या परिभाषा बतलायी?

   (घ) उनकी वाणी में निहित संदेश का क्या प्रभाव पड़ा?

   (ङ) गुरु नानक में धर्मप्रवर्तक के अतिरिक्त अन्य क्या विशेषताएँ थीं?

2. निम्नलिखित शब्दों के लिए दूसरे हिन्दी शब्द लिखो:

   (अ) प्रादुर्भाव, जटिलता, अंधविश्वास, उद्धार, अवतरित, आलोकित, सर्वांगीण, निहित, असहिष्णुता, पतनोन्मुख।

   (ब) निम्नलिखित शब्दों के विपरीतार्थक शब्द लिखो:

   एकता, पतनोन्मुख, मानवता, निहित, सम्पूर्णता।

   (क) गद्यांश में आये रेखांकित शब्दों के अर्थ स्पष्ट करते लिखो:

पूर्वोक्त प्रश्नों के आदर्श उत्तर

1. (क) गुरु नानकदेव का जन्म पन्द्रहवीं शताब्दी में हुआ था। उस समय हिन्दू जाति कर्मकाण्ड की कठिनाइयों में पड़ी हुई थी और बिना सोचे-समझे धार्मिक बातों में विश्वास करती थी। मुसलमानों पर भी इस कट्टरपन का प्रभाव पड़ा था। इसलिए दोनों धर्मवालों में कटुता पैदा हुई थी।

   (ख) गुरु नानक ने हिन्दू-मुसलिम धार्मिक कटुता को देखकर मानवता की प्रगति के लिए भारत के लोगों को भाईचारे और देश की एकता का पाठ सिखाया।

   (ग) गुरु नानक ने बतलाया कि किसी आदमी के धर्म की सचाई की परीक्षा उसकी चाल-चलन और अच्छा-बुरा व्यवहार होता है। ईश्वर वहीं पर पाया जाता है जहाँ सचाई, प्रेम और मन में किसी तरह का कपट नहीं होता।

   (घ) गुरु नानक की वाणी का प्रभाव यह पड़ा कि उनकी बातों को भारत के लोगों के अतिरिक्त दूसरे देशों को लोगों ने भी बड़े ध्यान से सुना और उससे प्रभावित हुए।

(ङ) गुरु नानक सिक्ख धर्म के चलानेवाले गुरु ही नहीं थे बल्कि संसार के गुरु, बहुत बड़े दार्शनिक और सबसे बढ़कर समाज को सुधारनेवाले महान पुरुष थे।

2. (अ) उत्पत्ति, कठिनाई, बिना सोचे-समझे किसी बात को मानना, छुटकारा, किसी देवता या ईश्वर का मनुष्य रूप में जन्म लेना, प्रकाशित, पूर्ण रूप से, रखा हुआ, कठोरता, नष्ट होनेवाला।

(ब) फूट, प्रगतिशील, दानवता, रहित, अपूर्णता।

(क) मनुष्यता को सुधारने के लिए। धर्म की परीक्षा (धर्म की सचाई)

अर्थग्रहण करने के कुछ नियम

1. प्रश्नों के उत्तर देने से पहले पूरे परिच्छेद को एक-दो बार ध्यान से पढ़ना चाहिए। अगर किसी शब्द का मतलब मालूम न हो तो संदर्भ समझकर उत्तर लिखना चाहिए।
2. परिच्छेद का भाव समझकर अपने आसान शब्दों में प्रश्नों के उत्तर लिखने चाहिए।
3. प्रश्नों को ध्यान में रखकर उनके उत्तर खोजने की कोशिश करनी चाहिए। यह कोई आवश्यक नहीं है कि पहले प्रश्न का जवाब परिच्छेद के प्रारंभ में ही हो और आखिरी प्रश्न का उत्तर आखिर में हो।
4. परिच्छेद में आये मुहावरों और कहावतों आदि का भाव उत्तर में आसान भाषा में लिखना चाहिए।
5. प्रश्न में जितने उत्तर की आवश्यकता हो, उतना ही उत्तर लिखना चाहिए। अनावश्यक विस्तार नहीं करना चाहिए।
6. यदि शीर्षक देना हो तो पूरे परिच्छेद को ध्यान में रखकर उसके भाव और मुख्य विचार समझकर उसके अनुसार शीर्षक देना चाहिए।
7. रेखांकित शब्दों का अर्थ स्पष्ट करते समय जहाँ तक संभव हो अपने आसान शब्दों में लिखना चाहिए।
8. तुलनात्मक विवेचन, उदाहरण, मुहावरेदार एवं आलंकारिक भाषा आवश्यक नहीं। इन सबसे अशुद्धियों के लिए अवसर मिलता है।

अभ्यास - 1

नीचे लिखे गद्यांश को ध्यान से पढ़ो और उसके नीचे दिये प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में लिखों:

Read the following Composition carefully and write answers to the questions given below it, in your own words:

चित्रकला, संगीत और नृत्य की ही तरह भारत की महान् जनता ने मूर्तिकला में भी बड़ा काम किया। आज से पाँच हजार बरस पहले सिन्धु नदी की घाटी में मोहनजोदड़ो की खुदाइयों में ताँबे, पत्थर और मिट्टी की बढ़िया मूर्तियाँ मिली हैं। मोहनजोदड़ो के साँड की मूर्ति तो अब दुनिया-भर में प्रसिद्ध हो चुकी है।

उसके बाद मौर्य-काल की ऊँची-ऊँची पत्थर की मूर्तियाँ मिलती हैं। अशोक का स्तम्भ उन्हीं दिनों की यादगार है। उस जमाने में पत्थर पर ऐसी पालिश की जाती थी कि आदमी अपना मुहँ भी देख ले।

मौर्य-काल के बाद मूर्तिकला उत्तरोत्तर उन्नति करती चली गई। साँची और भरहुत के स्तूप के साथ-साथ मथुरा के स्तूप और मूर्तियाँ भी विशेष प्रसिद्ध हैं।

गुप्त-काल में तो इस कला में मानो चार चाँद ही लग गये। उस काल की बुद्ध की खड़ी और बैठी मूर्तियाँ दुनिया के शिल्पियों के लिए आज भी आश्चर्य का विषय हैं। इस युग में धातु पत्थर दोनों की मूर्तियाँ काफी तादाद में बनीं।

गुप्त-काल के बाद गुफा मंदिरों में मूर्तियों की खुदाई का ज़माना आया। एलुरा औरंगाबाद से 24-25 कि.मी. दूर खुल्लाबाद की बस्ती के समीप है। कहते हैं कि यहाँ के सौंदर्य से प्रभावित होकर औरंगजेब ने औरंगाबाद की तरह खुल्लाबाद को बसाया था। यहीं औरंगजेब की कब्र बनी हुई है।

प्रश्न:

1. (क) मोहनजोदड़ो की खुदाई से क्या लाभ हुआ है?

   (ख) उस समय की पत्थर की पालिश में क्या विशेषता थी?

   (ग) मौर्य-काल की मूर्तिकला किस रूप में पाई जाती है?

   (घ) गुप्त-काल में मूर्तिकाल में क्या उन्नति हुई?

   (च) औरंगझेब ने कौन-सा शहर बसाया? क्यों?

2. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके लिखोः

गाँवों में किसानों रहता है। गाड़ियाँ के आने का समय सब दौड़े। मेरी पड़ोसी लड़ाई करती है। गायें-भैंसें सब घास खाते हैं।

3. विशेषण बनाओः

याद, विशेषता, उन्नति, काल, प्रभाव।

Unit-4

Letter Writing

पत्र–लेखन

पत्र–लेखन में पारिवारिक पत्र, सामाजिक पत्र, कार्यालयी पत्र और व्यापारिक पत्र पूछे जा सकते हैं। इनमें से कुछ नमूने निम्न है।

श्रीमत पुलिस कमिश्नर,
वृहद् कलत्ता नगर

दिनांक 10–02–2010

महोदय,

मैं आपका ध्यान निम्नलिखित विषय मर खींचना चाहता हूँ। यह प्रार्थना–पत्र मैं बहुत दुःखि और विवश होकर आपकी सेवा में भेज रहा हूँ।

पिछले दो–तीन महीनों से हमारे मुहल्ले में कुछ शरारती नौजवान, रात में दस–ग्यारह बजे के बाद गलियों में घूमते–फिरते रहते है, और जब किसी को अकेले जाते–जाते देखते हैं तो उसे परेशान करते है। इतना ही नहीं बल्कि कभी कभी किसी के पास कुछ होता है तो उससे छीन भी लेते हैं। यदी उनसे कुछ कहा जाता है तो बहुत बुरी तरह पेश आते है। और हर तरह की धमकियॉ देते हैं।

हर तरह से विवश होकर आपकी सेवा में यह पत्र भेजकर आशा रखता हूँ कि आप हमारे मुहल्ले की सभ्य जनता की कठिनाइयों के उपद्रव को दूर करने का कोइ ठोस कदम उठायेंगे।

कष्ट के लिए क्षमा चाहता हूँ।

भवदीय,

.....

पताः ––––––
11, चित्तरंजन एवेन्यू,
कलकत्ता

14, आकाशगंगा,
जगमोहनदास रोड,
बम्बई–10–3–2010

प्रिय मेहताब,

नमस्ते,

आज ही तुम्हारा पत्र मिला। पढकर बड़ा आनन्द हुआ कि तुम्हारी छुट्टियॉ बड़े मज़े से व्यतीत हुई और तुमने कई नये मित्र भी बनाये हैं। क्या ही अच्छा होता, यदि मैं भी तुम्हारे राथ होता।

तुमने मुझे विज्ञान की जो पुस्तक पढ़ने को दी उससे विशेष रूपसे परीक्षा पें बड़ी सहायता मिली। मेरे शिक्षक और दोस्तों ने भी उसकी प्रशंसा की। उच्च कक्षा के विद्यार्थियों के लिए सचमुच यह बड़ी उपयोगी सिद्ध होगी।

मैंने परीक्षा के बाद तुरंत लौटाने को वचन दिया था और आज के पत्र में तुमने मुझे याद भी दिलायी है, परंतु मुझे दुःख के साथ लिखना पडता है मि बार–बार ढूँढने पर भी किताब नहीं मिल रही है। न जाने मैंने कहॉ रख दी है। शायद राकेश से पूछने पर पता चल जाये क्यांकि वही बार–बार मुझसे मॉग–मॉगकर उसमें से परीक्षा की तैयारी करता रहता था। मित्र, विश्वास रखो, मैं फिर से उसे खोज निकालने का प्रयत्न करूँगा और शीघ्रातिशीघ्र किसी के हाथ तुम तक पहुँचा दूँगा। और यदि नहीं भी मिली, तो पिताजी से पत्र द्वारा प्रार्थना करूँगा कि किसी भी पुस्तक–भंडार से खरीदकर तुम्हें दे दें। तब तक कष्ट के लिए क्षमा करना।

अन्य विषयों की तैयारी तो हो ही गई होगी। परीक्षा खत्म होते ही पत्र भेजना। पुजनीय माता जी को मेरा प्रणाम कहना।

तुम्हारी प्रिय मित्र,

————————

सरकारी पत्र

पत्र–संख्या–क–1/26/76
भारत सरकार
गह–मंत्रालय

प्रषक,
श्री..... आई.ए.एस.
उपसचिव, भारत सरकार।

सेवा में,
मुख्य सचिव,
उत्तर प्रदेश सरकार,
लखनउ।

नयी दिल्ली, 110002
दिनांक 16.3.2010

विषयः अलीगढ़ में हुए विद्यार्थियों के उपद्रव

महोदय,

दिनांक 13 मार्च, 2010 के आपके स/2/13/10 संख्यक पत्र के उत्तर में मुझे आपको यह सूचित करने का निर्देश हुआ है कि हाल ही में दिल्ली से लौटते हुए अलीगढ विश्वविद्यालय के कुछ छात्रों और असामाजिक तत्वों ने विश्वविद्यालय के समीपवर्ती शमशाद मार्केट में केवल एक वर्ग–विशेष की दूकानों को जलाने की चेष्टा की, जिसे रोकने में स्थानीय पुलिस सफल नहीं रही। भारत सरकार इस मामले को बड़ी चिन्ता की दृष्टि से देख्ती है। आशंका है कि इस घटना की प्रतिक्रिया पीडिंत वर्ग के लोगों में हो और शांति तथा व्यवस्था का संकट उन्पन्न हो जाय। अतः गृह मंत्रालय स्थानीय पुलिस की सहायता के लिए आपके उनुरोध को स्वीकार करते हुए सी.आर.पी., के तीन प्लाटूनों को अविलम्ब अलीगढ भेज रही है और आश करती है कि सभी नाजुक स्थलों पर पुलिस तथा सी.आर.पी., के जवानों की तैनाती कर दी जाएगी, और साम्प्रदायिक वैमनस्य को बढ़ने से तुरंत राक दिया जाएगा।

इस सम्बन्ध में अन्य जो भी सहायता उत्तर प्रदेश सरकार चाहेगी, उसे देने के लिए भारत सरकार तत्पर रहेगी।

गृह–मंत्रालय को ताज़ी स्थिति की सूचना दी जाती रहे।

आपका विश्वासभाजन

.....
उप सचिव

प्रतिलिपि

1. महामहिम राज्यपाल
राजनिवास,
उत्तर प्रदेश,
लखनउ

2. मुख्यमंत्री,
उत्तर प्रदेश सचिवालय,
लखनउ

3.जिलाधीश,
अलीगढ

परिपत्र

छठी पंचवर्षीय योजना के लिए राष्ट्रीय प्राथमिकताओं और क्षेत्रीय आवश्यकताओं का समावेश करने के लिए आयोग ने सभी राज्य सरकारो और केन्द्र–शासित प्रदेशें को यह सूचित करना आवश्यक समझाा है कि सभी सम्बन्धित इकाइयां अपनी आवश्यकताओं को प्राथमिकता के क्रम से, उन पर च्यय होने वाली अनुमति राशि, उनका स्थान तथा उनके पूर्ण होने वाले लाभ इत्यादि के विवरण के साथ योजना–आयोग के पास पत्र–प्रेषण की तिथि से तीन माह के अन्दर भेज दें। इस परिपत्र को अत्यावश्यक माना जाय।

————,
क ख ग
सचिव,
योजना–आयोग,
भारत सरकार

1. समस्त राज्य–सरकारों
के मुख्य सचिव

2. समस्त केन्द्र–शासित
प्रेदेशों के उपसचिव

3. भारत सरकार के
सभी मंत्रालय

Unit-5

Précis Writing

नीचे लिखे गद्यांश को ध्यान से पढें और उसे एक तिहाई (1/3) भाग में लिखो:

Read the following Question given below carefully and convert it into one Third (1/3) of it's content :

प्रश्न:

राजा कृष्णदेव राय के दरबार में घोड़ों का एक व्यापारी आया। राजा घोड़ों के शौकीन थे। मगर उन्हें वही घोड़ा पसंद आया, जो व्यापारी की सवारी के काम आता था।

व्यापारी बोला-- ''महाराज, यह मेरे अलावा किसी को सवारी नहीं करने देता।'' राजा ने कहा-- ''हमारे यहाँ एक से एक बढ़कर घुड़सवार हैं। वे इसे वश में कर लेंगे।'' व्यापारी को ताव आ गया। बोला-- ''महाराज, आपके घुड़सवार इस पर सवारी करने में सफल हो गए, तो घोड़ा आपको भेंट दे दूँगा। वर्ना चौगुनी कीमत लूँगा।''

राजा मान गए। घुड़सवारों को बुलाया। मगर घोड़े ने उन्हें हाथ भी न लगाने दिया।

तेनालीराम पास में ही खड़ा था। बोला--- ''महाराज, जरा मैं भी इसे देख लूँ।'' राजा व्यंग्य से बोले--- ''सेनापति तक मात खा गए। तुम क्या तीर मारोगे? घोड़े ने गिरा दिया, तो हड्डी-फसली और टूट जाएँगी।'' तेनालीराम मुस्करा दिया। व्यापारी से जाकर कहा--- ''जरा अपना दुशालाता तो दो। बूढ़ा आदमी हूँ। घोड़ा भागेगा, तो हवा लगेगी।''

व्यापारी ने दुशाला दे दिया। तेनालीराम ने उसे सिर से पीठ तक लपेट लिया। सिर्फ आँखें ही दीख रही थीं। वह घोड़े के पास आया। घोड़ा शांत रहा। तेनालीराम ने उस पर भरपूर सवारी की।

व्यापारी का चेहरा फक्का राजा और सारे लोग हैरान। घोड़े से उतरकर तेनालीराम ने कहा-- ''इसमें हैरानी की क्या बात है। घोड़ा मालिक की गंध पहचानता है। दुशाला मैंने इसीलिए ओढ़ा था। इसे सुंघकर वह मुझे ही मालिक समझ बैठा।''

बेचारा व्यापारी शर्त हार गया।

उत्तर

राजा कृष्णदेव राय के दरबार में घोड़ों का एक व्यापारी आया। राजा को वही घोड़ा पसंद आया, जो व्यापारी की सवारी के काम आता था। व्यापारी बोला-- यह मेरे अलावा किसी को सवारी नहीं करने देता।''

राजा ने कहा-- ''हमारे यहाँ एक से एक बढ़कर घुड़सवार हैं। वे इसे वश में कर लेंगे।''व्यापारी को ताव आ गया। बोला-- ''महाराज, आपके घुड़सवार इस पर सवारी करने में सफल हो गए, तो घोड़ा आपको भेंट दे दूँगा। वर्ना चौगुनी कीमत लूँगा।''राजा मान गए। घुड़सवारों को बुलाया। मगर घोड़े ने उन्हें हाथ भी न लगाने दिया। तेनालीराम पास में ही खड़ा था तेनालीराम ने व्यापारी का दुशाला सिर से पीठ तक लपेट लिया और घोड़े के पास आया। घोड़ा मालिक की गंध पहचान लिया । घोड़ा शांत रहा। तेनालीराम ने उस पर भरपूर सवारी की। बेचारा व्यापारी शर्त हार गया।

QUESTION PAPER PATTERN

Paper -1 (First Year)

Section-A

Prose and Short Stories – Questions and Annotation:

Answer any Five out of Eight – Each Question carries
5 Marks- Total 5X5=25 Marks

Section- B

Answer any Five out of Eight -Each Question carries
15 marks -Total - 15X5 = 75Marks

A. Essay type question from Prose and Short Stories: (One out of Two)
B. Grammar (One out of Two)
C. Letter Writing (One out of Two)
D. Comprehension
E. Précis Writing